यह परंपरा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही। इसका सबसे विकसित रूप हमें आठवीं शताब्दी के कैलाशनाथ मंदिर में दिखता है। जहाँ पूरी पहाड़ी को काटकर उसे मंदिर का रूप दिया गया था। एक ताम्रपत्र अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मंदिर का मुख्य वास्तुकार (मूर्तिकार) भी मंदिर को बनाकर आश्चर्यचकित रह गया था। यह वास्तुकार अपने आश्चर्य को इन शब्दों में व्यक्त करता है, "हे भगवान, यह मैंने कैसे बनाया।"

इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि वैष्णववाद और शैववाद के उदय ने मूर्तिकला तथा वास्तुकला के विकास को अत्यधिक प्रोत्साहित किया।

## तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. स्तूप क्यों और कैसे बनाए जाते थे ?

उत्तर—स्तूप बौद्ध धर्म से जुड़ा एक स्मारक है, स्तूप को बौद्ध धर्मावलंबी एक पवित्र स्थान मानते हैं। जिन स्थानों पर बोधिसत्वों एवं बुद्ध से जुड़े कुछ अवशेष जैसे उनकी अस्थियाँ या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान गाड़ दिये गये थे। इन टीलों को स्तूप कहते थे। स्तूप बनाने की परंपरा बुद्ध से पहले की रही होगी लेकिन वह बौद्ध धर्म से जुड़ गई। स्तूपों को बनाने के लिए कई राजाओं के द्वारा दान दिया गया जैसे सातवाहन वंश के राजा, इसके अलावा अशोक ने भी अपने राज्य में अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया। स्तूप निर्माण के लिए दान शिल्पकारों और व्यापारियों की श्रेणियों द्वारा दिए गए। स्तूप का संस्कृत अर्थ टीला होता है जो एक गोलार्द्ध के रूप में होता है शुरू में यह मिट्टी के टीले के रूप में विकसित हुआ परंतु धीरे-धीरे इसकी संरचना जटिल होती गई और यह चौकोर, गोल और अर्द्धअण्डाकार रूप लेने लगा।

●●

भाग-2

अध्याय 4

# भक्ति-सूफ़ी परंपराएँ—धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ

## ( लगभग आठवीं से अठारहवीं सदी तक )

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. वैदिक देवकुल के अंतर्गत किन देवताओं की पूजा की जाती थी—
   (a) इंद्र (b) अग्नि (c) सोम (d) उपरोक्त सभी।
2. नयनार संत उपासना करते थे—
   (a) विष्णु की (b) शिव की (c) इंद्र की (d) कृष्ण की।
3. विष्णु भक्त संत क्या कहलाते थे—
   (a) अलवार (b) नयनार (c) वीरशैव (d) जिम्मी।
4. वीरशैव परंपरा के अनुयायी क्या कहलाए—
   (a) नयनार (b) अलवार (c) योगी (d) लिंगायत।
5. दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई—
   (a) बारहवीं शताब्दी में (b) तेरहवीं शताब्दी में
   (c) चौदहवीं शताब्दी में (d) दसवीं शताब्दी में।
6. इस्लामी शासकों के अधीन संरक्षित श्रेणी को कौन-सा कर देना पड़ता था—
   (a) जजिया (b) जकात (c) शुक्राना (d) हज।
7. तजाकिस्तान से भारत आए लोगों को क्या नाम दिया गया—
   (a) तुरुष्क (b) ताजिक (c) यहूदी (d) पारसीक।

Scanned with CamScanner

8. भारत में आने वाला सबसे प्रभावशाली सूफ़ी सिलसिला था—
   (a) चिश्ती (b) सुहरावर्दी (c) कादिरी (d) फिरदौसी।
9. वैष्णवी परंपरा की जीवनियों के अनुसार कबीरदास के गुरु थे—
   (a) रामदास (b) रैदास (c) रामानंद (d) बाबा फ़रीद।
10. पहले सिख गुरु थे—
   (a) गुरुनानक देव (b) गुरु अंगद देव (c) गुरु तेगबहादुर (d) गुरु गोबिंद सिंह।

उत्तर—1. (d), 2. (b), 3. (a), 4. (d), 5. (b), 6. (a), 7. (b), 8. (a),9. (c), 10. (a).

**प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

1. महान और लघु परंपरा जैसे शब्द .............. ने प्रयुक्त किए।
2. .............. काव्य संकलन को तमिल वेद के रूप में जाना जाता है।
3. शेख मुइनुद्दीन की दरगाह में इमारत .............. ने बनवायी थी।
4. अमीर खुसरो ............ के शिष्य थे।
5. कबीर भक्ति परंपरा की ............ के कवि थे।
6. मीराबाई राजस्थान के ................ राज्य की राजकुमारी थी।

उत्तर—1. समाजशास्त्री राबर्ट रेडफील्ड, 2. नलयिरादिव्यप्रबंधम, 3. गियासुद्दीन खिलजी, 4. शेख निज़ामुद्दीन औलिया, 5. निर्गुण भक्ति शाखा, 6. मेड़ता।

**प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—**

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| 1. अलवार | (a) अमूर्त, निराकार ईश्वर |
| 2. नयनार | (b) दिल्ली |
| 3. निर्गुण भक्ति परंपरा | (c) विष्णु भक्त |
| 4. वीरशैव या लिंगायत | (d) बासवन्ना |
| 5. शेख मुइनुद्दीन चिश्ती | (e) शिव भक्त |
| 6. शेख निज़ामुद्दीन औलिया | (f) अजमेर। |

उत्तर—1. (c), 2. (e), 3. (a), 4. (d), 5. (f), 6. (b).

**प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—**

1. भक्ति परंपरा को दो प्रमुख वर्गों—सगुण और निर्गुण में बाँटा गया है।
2. आरंभिक भक्ति आंदोलन बासवन्ना के नेतृत्व में हुए।
3. अलवार व नयनार ने ब्राह्मणों की सम्प्रभुता का समर्थन किया।
4. इस्लाम धर्म के ज्ञाता व संरक्षक उलमा कहलाते थे।
5. सूफ़ी परंपरा का विकास ग्यारहवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ।
6. शेख निज़ामुद्दीन औलिया का खानकाह दिल्ली के गियासपुर नामक स्थान में था।
7. बारहवीं शताब्दी के आसपास सूफ़ी सिलसिलों का गठन प्रारंभ हो गया।
8. अकबर ने शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की सोलह बार यात्रा की।
9. मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित प्रेमाख्यान का नाम पद्मावत है।
10. अमीर खुसरो शेख मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।

उत्तर— 1. सत्य, 2. असत्य, 3. असत्य, 4. सत्य, 5. असत्य, 6. सत्य, 7. सत्य, 8. असत्य, 9. सत्य, 10. असत्य।

**प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—**

1. वैदिक देवकुल के अंतर्गत किन देवताओं की पूजा की जाती थी ?
2. नयनार संत किसकी उपासना करते थे ?
3. विष्णु भक्त संत क्या कहलाते थे ?

Scanned with CamScanner

4. वीरशैव परंपरा के अनुयायी क्या कहलाए ?
5. दिल्ली सल्तनत की स्थापना कब हुई ?
6. इस्लामी शासकों के अधीन संरक्षित श्रेणी को कौन-सा कर देना पड़ता था ?
7. तज़ाकिस्तान से भारत आए लोगों को क्या नाम दिया गया ?
8. भारत में आने वाला सबसे प्रभावशाली सूफी सिलसिला कौन था ?
9. वैष्णवी परंपरा की जीवनियों के अनुसार कबीरदास के गुरु कौन थे ?
10. पहले सिख गुरु कौन थे ?
11. बारहवीं शताब्दी में उड़ीसा के मुख्य देवता जगन्नाथ को किसका स्वरूप माना गया ?
12. "महान" और "लघु" परंपरा जैसे शब्द किस इतिहासकार ने प्रयुक्त किए ?
13. भक्ति परंपरा को किन दो वर्गों में बाँटा गया है ?
14. किस शिवभक्त स्त्री ने उद्देश्य प्राप्ति हेतु घोर तपस्या की ?
15. किस चोल सम्राट ने संत कवि अप्पार संबंदर व सुंदरार की प्रतिमाएँ शिव मंदिर में स्थापित करवायी ?
16. वीरशैव आंदोलन किसके नेतृत्व में हुआ ?
17. मुसलमानों के धर्मगुरुओं को क्या कहा जाता था ?
18. सूफियों की संस्था को किस नाम से जाना जाता था ?
19. बाबा गुरुनानक ने किसे अपने बाद गुरुपद पर बिठाया ?

उत्तर—1. इंद्र, अग्नि, सोम, 2. शिव की, 3. अलवार, 4. लिंगायत, 5. तेरहवीं शताब्दी में, 6. जज़िया, 7. ताजिक, 8. चिश्ती, 9. रामानंद, 10. गुरुनानक देव, 11. विष्णु, 12. राबर्ट रेडफील्ड, 13. सगुण (विशेषण युक्त) व निर्गुण (विशेषणहीन), 14. करइक्काल अम्मइयार, 15. परांतक प्रथम, 16. बासवन्ना, 17. उलमा, 18. ख़ानकाह, 19. अंगद।

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. आठवीं से अठारहवीं शताब्दी तक प्राप्त साहित्यिक स्रोतों की दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर—विशेषताएँ—(1) आठवीं से अठारहवीं शताब्दी तक प्राप्त साहित्यिक स्रोतों में संत कवियों की रचनाएँ हैं, जिन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं में अपनी रचनाओं को व्यक्त किया था। (2) अधिकांश साहित्यिक स्रोत संगीतबद्ध हैं, जो संतों की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों द्वारा संकलित किए गए थे।

**प्रश्न 2. तांत्रिक पूजा पद्धति क्या थी? इसकी दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर—अधिकांशत: देवी की आराधना पद्धति को तांत्रिक पद्धति के नाम से जाना जाता है। यह पूजा पद्धति देश के कई भागों में प्रचलित थी। इसकी दो विशेषताएँ हैं—(1) इस पूजा-पद्धति में स्त्री और पुरुष दोनों शामिल हो सकते थे। (2) इस पद्धति के कर्मकांडीय संदर्भ में वर्ग और वर्ण भेद की अवहेलना की जाती थी।

**प्रश्न 3. भक्ति परंपरा के दो मुख्य वर्ग कौन-से थे ?**

उत्तर—भक्ति परंपरा के दो मुख्य वर्ग थे—

1. **सगुण ( विशेषण सहित ) भक्ति परंपरा**—इस परंपरा में शिव, विष्णु तथा उनके अवतार व देवियों की आराधना की जाती थी।

2. **निर्गुण ( विशेषण हीन ) भक्ति परंपरा**—इस परंपरा में निर्गुण, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती थी।

**प्रश्न 4. अलवार संतों की किस रचना को तमिल वेद जितना महत्वपूर्ण बताया गया है ?**

उत्तर—अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन ' नलयिरादिव्यप्रबंधम् ' का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता है। इस ग्रंथ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों जितना बताया गया था, जो ब्राह्मणों द्वारा पोषित थे।

**प्रश्न 5. अलवार व नयनार संतों द्वारा चलाए गए भक्ति आंदोलन की कोई दो विशेषताएँ बताइए।**

उत्तर—भक्ति आंदोलन की दो प्रमुख विशेषताएँ थीं—(1) भक्ति आंदोलन द्वारा अलवार व नयनार संतों ने जाति प्रथा तथा ब्राह्मणों के प्रभुत्व के विरोध में आवाज उठाई। (2) इस परंपरा की सबसे प्रमुख विशिष्टता इसमें स्त्रियों की उपस्थिति थी।

Scanned with CamScanner

**प्रश्न 6. अलवार व नयनार संतों के भक्ति साहित्यों का किस प्रकार संकलन किया गया?**

उत्तर—दसवीं शताब्दी तक बारह अलवार संतों की रचनाओं का संकलन कर लिया गया, जो नलयिरादिव्यप्रबंधम् (चार हजार पावन रचनाएँ) के नाम से जाना जाता है। दसवीं शताब्दी में ही अप्पार संबंदर और सुंदरार नामक नयनार संतों की कविताओं का संकलन "तवरम्" में किया गया, जिसमें कविताओं का संगीत के आधार पर वर्गीकरण हुआ।

**प्रश्न 7. चौदहवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में कोई संत रचनाएँ क्यों नहीं लिखी गई?**

उत्तर—चौदहवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में वह समय था, जब अनेक राजपूत राज्यों का उद्भव हुआ। इन सभी राज्यों में ब्राह्मणों का महत्वपूर्ण स्थान था, जो ऐहिक तथा आनुष्ठानिक दोनों ही कार्य करते थे। उनकी इस प्रभुसत्ता को चुनौती देने का प्रयास शायद ही किसी ने किया, इसलिए चौदहवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में कोई संत रचनाएँ नहीं लिखी गईं।

**प्रश्न 8. उलमा किसे कहते थे?**

उत्तर—उलमा (आलिम का बहुवचन) इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे। इस्लाम धर्म के संरक्षक होने के नाते वे धार्मिक, कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

**प्रश्न 9. 'जिम्मी' किन्हें कहा जाता था ?**

उत्तर—'जिम्मी' शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द जिम्मा से हुई है, जिसका अर्थ संरक्षित क्षेत्र होता है। जिम्मी मुसलमान शासन क्षेत्र में रहने वाले संरक्षित समुदाय थे। जिम्मी वे लोग थे जो उद्घटित धर्मग्रंथ को मानने वाले थे, जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई। ये लोग मुस्लिम शासकों को उनके द्वारा दिए गए संरक्षण के बदले में जजिया नामक कर चुकाते थे।

**प्रश्न 10. जीनन क्या है?**

उत्तर—जीनन (व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द ज्ञान से) वे भक्ति गीत थे, जो राग में निबद्ध थे तथा पंजाबी, मुल्तानी, सिंधी, कच्छी, हिंदी और गुजराती भाषाओं में दैनिक प्रार्थना के दौरान गाए जाते थे।

**प्रश्न 11. तमिलनाडु में भक्ति आंदोलन की दो प्रमुख स्त्री संतों के नाम लिखिए।**

उत्तर— तमिलनाडु में भक्ति आंदोलन के दो प्रमुख स्त्री संत थे—

(1) अंडाल, जो स्वयं को विष्णु की प्रेयसी मानकर अपनी प्रेमभावना छंदों में व्यक्त करती थीं। (2) करइक्काल अम्मइयार, जो शिवभक्त थीं। इन्होंने अपनी उद्देश्य प्राप्ति के लिए घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

**प्रश्न 12. जोगी कौन थे?**

उत्तर—जोगी गोरखनाथ तथा अघोरनाथ के शिष्य थे। ये उत्तरी भारत में बहुत ही लोकप्रिय थे। सूफी संतों पर भी इनका बहुत प्रभाव था।

**प्रश्न 13. भारतीय परंपरा में भक्ति का क्या स्थान था ?**

उत्तर—भारतीय परंपरा में भक्ति को साधना का एक अंग माना गया। इसके द्वारा मनुष्य ईश्वर को पा सकता है। भगवद्गीता में स्वयं भगवान कृष्ण ने इस तथ्य की पुष्टि की है।

**प्रश्न 14. सूफीवाद के अतिरिक्त कौन-से नवीन आंदोलन हुए, जिन्होंने इसके सिद्धांतों का विरोध किया ?**

उत्तर—सूफीवाद के अतिरिक्त कुछ रहस्यवादियों ने सूफी सिद्धांतों व ख़ानकाह का तिरस्कार करके रहस्यवादी फकीर की ज़िंदगी का अनुसरण किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था, जैसे—कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी आदि।

**प्रश्न 15. भारत में चिश्ती समुदाय की लोकप्रियता का क्या कारण था ?**

उत्तर—बारहवीं शताब्दी के अंत तक भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती समुदाय सबसे अधिक लोकप्रिय रहा। इसका कारण यह था कि उन्होंने न केवल अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला बल्कि भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

Scanned with CamScanner

**प्रश्न 16. प्रमुख सूफ़ी सिलसिलों के नाम लिखिए।**

उत्तर—भारत आने वाले प्रमुख सूफ़ी सिलसिले थे—चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी, फिरदौसी, हबीबी, जुनैदी, शत्तारी, इत्यादी आदि।

**प्रश्न 17. किन्हीं पाँच प्रमुख चिश्ती संतों के नाम लिखिए।**

उत्तर—पाँच प्रमुख चिश्ती संतों के नाम हैं—(1) शेख मुइनुद्दीन चिश्ती, (2) ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी, (3) शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर, (4) शेख निज़ामुद्दीन औलिया, (5) शेख नसीरूद्दीन चिराग-ए-देहली।

**प्रश्न 18. ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह क्यों प्रसिद्ध थी?**

उत्तर—ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह निम्नलिखित कारणों से प्रसिद्ध थी—

(1) यह दरगाह शेख मुइनुद्दीन की सदाचारिता और धर्मनिष्ठा तथा उनके आध्यात्मिक वारिसों की महानता और राजसी मेहमानों द्वारा दिए गए प्रश्रय के कारण लोकप्रिय थी। (2) यह दरगाह दिल्ली और गुजरात को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग पर थी, अत: अनेक यात्री यहाँ आते थे।

**प्रश्न 19. मसनवी क्या थी?**

उत्तर—मसनवी सूफ़ी संतों द्वारा लिखी गई लंबी कविताएँ थीं, जहाँ ईश्वर के प्रति प्रेम को मानवीय प्रेम के रूपक के द्वारा अभिव्यक्त किया गया।

**प्रश्न 20. अकबर ने ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह की कितने बार यात्रा की और क्यों ?**

उत्तर—अकबर ने ख़्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह की चौदह बार यात्राएँ कीं, जिनके उद्देश्य अलग-अलग थे। अकबर ने यहाँ कभी नयी जीत के लिए आशीर्वाद लेने तथा संकल्प की पूर्ति पर या फिर पुत्रों के जन्म पर यात्राएँ कीं।

**प्रश्न 21. कबीर की उलटबाँसी रचनाओं का क्या तात्पर्य है ?**

उत्तर—कबीर की कुछ रचनाएँ उलटबाँसी कविताएँ कहलाती हैं। ये इस प्रकार से लिखी गई हैं कि इनमें रोजमर्रा के अर्थ को उलट दिया गया है। ये रचनाएँ परमसत्य के स्वरूप को समझने में मुश्किल को दर्शाता है।

**प्रश्न 22. सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव को उदाहरण देकर समझाइए।**

उत्तर—सुल्तानों और सूफ़ियों के बीच तनाव के कुछ उदाहरण उपलब्ध हैं। अपनी सत्ता का दावा करने के लिए दोनों ही कुछ आचारों पर बल देते थे, जैसे—झुककर प्रणाम करना और कदम चूमना। कभी-कभी शेखों के अनुयायी उन्हें आडंबरपूर्ण पदवियों से संबोधित करते थे।

**प्रश्न 23. खालसा पंथ की नींव किसने रखी ? इसके पाँच प्रतीक क्या थे ?**

उत्तर—खालसा पंथ की नींव सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह जी ने डाली थी। उन्होंने इसके पाँच प्रतीक बताए थे—बिना कटे केश, कृपाण, कच्छ, कंघा और लोहे का कड़ा।

**प्रश्न 24. बासवन्ना कौन थे ?**

उत्तर—बासवन्ना (1106-68) कलचुरि राजा के दरबार में पदस्थ एक ब्राम्हण मंत्री थे, जिन्होंने कर्नाटक में वीरशैव अथवा लिंगायत परंपरा को प्रारंभ किया।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. महान और लघु परंपरा से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर—"महान" और "लघु" जैसे शब्द बीसवीं शताब्दी के समाजशास्त्री **राबर्ट रेडफील्ड** द्वारा एक कृषक समाज के सांस्कृतिक आचरणों का वर्णन करने के लिए मुद्रित किए गए। इस समाजशास्त्री ने निम्न प्रकार से महान व लघु परंपरा को परिभाषित किया—

**महान परंपरा**—रेडफील्ड ने देखा कि किसान उन कर्मकांडों और पद्धतियों का अनुसरण करते थे जिनका समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग जैसे पुरोहित और राजा द्वारा पालन किया जाता था। इन्हीं कर्मकांडों को महान परंपरा की संज्ञा दी गई।

Scanned with CamScanner

लघु परंपरा—कृषक समुदाय द्वारा कुछ अन्य लोकाचारों का पालन करते थे, जो महान परिपाटी से सर्वथा भिन्न थे। इन्हें "लघु परंपरा" की संज्ञा दी गई।

रेडफील्ड ने देखा कि महान और लघु दोनों परंपराओं में समय के साथ हुए पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण परिवर्तन हुए। यद्यपि विद्वान इन प्रक्रियाओं और वर्गीकरण के महत्व से इनकार नहीं करते, किंतु इन शब्दों में उभरे पद सोपानात्मक स्वर का विरोध करते हैं।

**प्रश्न 2. प्रारंभिक भक्ति परंपराओं की मुख्य विशेषता क्या थी ?**

उत्तर—प्रारंभिक भक्ति परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं—

(1) इस काल में आराधना के तरीकों के क्रमिक विकास के दौरान बहुत बार संत कवि ऐसे नेता के रूप में उभरे जिनके आस-पास भक्तजनों के एक पूरे समुदाय का गठन हो गया। (2) यद्यपि इस समय भी ब्राह्मण ही देवताओं और भक्तजनों के बीच मध्यस्थ का कार्य करते रहें, किंतु इन परंपराओं ने स्त्रियों और निम्न वर्णों को भी स्वीकृति व स्थान दिया। (3) भक्ति परंपरा की एक और विशेषता इसकी विविधता है। धर्म के इतिहासकार भक्ति परंपरा को दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं—सगुण (विशेषण सहित) और निर्गुण (विशेषण हीन)। सगुण परंपरा में विष्णु, शिव या देवियों के मूर्त रूप की उपासना होती थी, जबकि निर्गुण परम्परा में ईश्वर के निराकार रूप की उपासना की जाती थी। (4) भक्ति परंपरा के भक्ति प्रदर्शन में, मंदिरों में इष्टदेव की आराधना को लेकर उपासकों का प्रेमभाव में तल्लीन हो जाना दिखाई पड़ता है। भक्ति रचनाओं का उच्चारण अथवा गाया जाना इस उपासना पद्धति के मुख्य अंश थे।

**प्रश्न 3. उत्तरी भारत में नवीन धार्मिक परंपराओं के उदय पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर**—उत्तरी भारत में विष्णु और शिव जैसे देवताओं की उपासना मंदिरों में की जाती थी, जिनका निर्माण शासकों की सहायता से किया जाता था। किंतु फिर भी इस क्षेत्र में ब्राह्मणों की प्रभुसत्ता को चुनौती देने का प्रयास किसी ने नहीं किया। इसका कारण यह था कि इस काल में उत्तर भारत में राजपूतों का शासन था, जिनके राज्य में ब्राह्मणों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

इसी समय कुछ धार्मिक नेता, जो रूढ़िवादी ब्राह्मणीय परंपराओं के विरोधी थे, उनके प्रभाव में विस्तार हो रहा था। ऐसे नेताओं में नाथ जोगी और सिद्ध शामिल थे। उनमें से बहुत से लोग शिल्पी समुदाय के, जिनमें जुलाहे शामिल थे। संयोजित दस्तकारी के उत्पादन के साथ इनका महत्व बढ़ रहा था। अनेक नवीन धार्मिक नेताओं ने वैदिक सत्ता को चुनौती दी और अपने विचार आम लोगों की भाषा में रखे। समय के साथ यह भाषाएँ भी उसी प्रकार विकसित हुईं, जिस प्रकार आज प्रयोग में लाई जाती हैं। किंतु अपनी लोकप्रियता के बाद भी ये नवीन धार्मिक नेता राजकीय प्रक्षय प्राप्त नहीं कर पाए।

**प्रश्न 4. अमीर खुसरो कौन था? उन्होंने किस विधा का प्रचलन प्रारंभ किया ?**

**उत्तर**—अमीर खुसरो (1253 – 1323) चौदहवीं सदी के लगभग दिल्ली के निकट रहने वाले एक प्रसिद्ध कवि, गायक और संगीतज्ञ थे। अमीर खुसरो पहले ऐसे मुस्लिम कवि थे, जिन्होंने हिंदी, हिंदवी और फारसी में एक साथ कविताएँ लिखी। अमीर खुसरो शेख निजामुद्दीन औलिया के अनुयायी थे। उन्होंने कौल (अरबी शब्द जिसका अर्थ है कहावत) का प्रचलन करके चिश्ती समा को एक विशिष्ट आकार दिया। कौल को कव्वाली के शुरू और आखिर में गाया जाता था। इसके बाद सूफी कविता का पाठ होता था, जो फारसी, हिंदवी तथा उर्दू में होती थी। और कभी-कभी इन तीनों ही भाषाओं के शब्द इसमें मौजूद होते थे। शेख निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर गाने वाले कव्वाल गायन की शुरुआत कौल से करते हैं।

**प्रश्न 5. सूफी और भक्ति संप्रदाय के विचारों में क्या समानताएँ थीं ?**

**उत्तर—सूफी और भक्ति संप्रदाय के विचारों में समानताएँ**—भक्ति आंदोलन का प्रारंभ छठवीं शताब्दी में अलवारों (विष्णु भक्त) और नयनारों (शिवभक्त) के नेतृत्व में हुआ, जबकि सूफ़ीवाद का विकास ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान हुआ। इन दोनों ही परंपराओं में निम्नलिखित समानताएँ थीं—

(1) सूफी और भक्ति संप्रदाय दोनों ही धार्मिक सरलता और शुद्धता पर बल देते हैं। (2) दोनों ही संप्रदायों ने जातिप्रथा का खंडन कर मनुष्य की समानता पर बल देते हैं। (3) दोनों ही संप्रदायों ने धार्मिक आडंबरों, रूढ़ियों,

Scanned with CamScanner

आडंबरवादों की निंदा की है। (4) दोनों ही संप्रदाय यह मानते हैं कि ईश्वर एक है और उसे सच्चे प्रेम व भक्ति से प्राप्त किया जा सकता है। (5) दोनों ही संप्रदायों में मूर्ति पूजा का विरोध किया जाता है। (6) दोनों ही संप्रदाय गुरु की आवश्यकता पर बल देते हैं।

सूफी संतों के शिष्यों में हिंदू मुसलमान दोनों ही शामिल थे। उनके सरल उपदेशों, ईश्वर की एकता संबंधी विचारों, भाईचारा और समानता के विचारों ने हिंदू संतों को प्रभावित किया। अत: उन्होंने सूफी आंदोलन की तरह भक्ति आंदोलन का भी प्रचार-प्रसार किया।

**प्रश्न 6. कबीरदास के जन्म एवं उनके गुरु के विषय में क्या विवाद है? (NCERT)**

उत्तर—कबीरदास के जन्म को लेकर आज भी विवाद है कि वे जन्म से हिंदू थे अथवा मुसलमान। यह विवाद कई संत जीवनियों में उभर कर आते हैं, जो सत्रहवीं शताब्दी अर्थात् उनकी मृत्यु के 200 वर्ष बाद लिखे गए। वैष्णवी परंपरा की जीवनियों में कबीर (कबीर का अरबी में अर्थ है महान) को जन्म से हिंदू कबीरदास बताया गया है। किंतु उनका पालन/पोषण एक गरीब मुसलमान परिवार में हुआ, जो जुलाहे थे और कुछ समय पहले ही इस्लाम धर्म के अनुयायी बने थे। इन जीवनियों के अनुसार कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले गुरू रामानंद थे। किंतु कबीर के पद, गुरु और सतगुरु संबोधन का इस्तेमाल किसी विशेष व्यक्ति के संदर्भ में नहीं करते। इतिहासकारों के अनुसार कबीर और रामानंद का समकालीन होना मुश्किल प्रतीत होता है जब तक कि उन्हें लंबी आयु न दे दी जाए। अत: वे परंपराएँ जो दोनों को जोड़ती हैं, स्वीकार नहीं की जा सकती।

**प्रश्न 7. कबीर ने परम सत्य के वर्णन के लिए किन परिपाटियों का उपयोग किया ?**

उत्तर—कबीरदास ने परम सत्य के वर्णन के लिए अनेक परिपाटियों का प्रयोग किया है। एक ओर जहाँ इस्लाम के दर्शन की तरह वे सत्य को अल्लाह, खुदा, हजरत और पीर कहते हैं, वहीं दूसरी ओर वेदांत से प्रभावित होकर वे सत्य को अलख (अदृश्य), निराकार, ब्रम्हन् और आत्मन् कहकर भी संबोधित करते हैं।

कबीर कुछ शब्द पदों, जैसे शब्द और शून्य का भी उपयोग करते हैं, जो योगी परंपरा से ली गई है। इन पदों में विविध और कभी-कभी विरोधात्मक विचार व्यंजित होते हैं। कबीर की कुछ रचनाएँ हिन्दू धर्म के बहुदेववाद और मूर्ति पूजा का खंडन करते हुए इस्लामी दर्शन के एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का समर्थन करती हैं। जबकि कबीर की अन्य कविताएँ जिक्र और इश्क के सूफी सिद्धांतों का उपयोग करके, हिन्दू धर्म के 'नाम सिमरन' की परंपरा का समर्थन करती है। ये सभी रचनाएँ कबीरदास की हैं, यह कहना कठिन है। विद्वान पदों की भाषा-शैली और विषयवस्तु के आधार पर कबीरदास के पदों को पहचानने का प्रयास करते हैं।

**प्रश्न 8. मीराबाई पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (NCERT)**

उत्तर—**जीवन परिचय**—मीराबाई (लगभग पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी) संभवत: भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री हैं। उनकी जीवनी उनके लिखे भजनों के आधार पर संकलित की गई है। मीराबाई मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थी, जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया था। उन्होंने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ के दायित्वों का निर्वहन करने से इंकार कर दिया। वह विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण को अपना एक मात्र पति मानती थी। उनके ससुराल वालों ने उन्हें विष देने का प्रयत्न किया, किन्तु वह राजभवन से निकलकर एक परिव्राजिका संत बन गईं।

**प्रमुख रचनाएँ**—मीराबाई ने अपने अंतर्मन की भावप्रवणता को व्यक्त करने के लिए अनेक गीतों की रचना की। उनकी प्रमुख रचनाओं में नरसी का मायरा, गीत गोविंद टीका, राग गोविंद तथा सोरठ के पद हैं।

कुछ परंपराओं के अनुसार मीराबाई के गुरु रैदास हैं, जो एक चर्मकार थे। इससे यह ज्ञात होता है कि मीराबाई जातिवादी परंपरा की विरोधी थीं। यद्यपि मीराबाई ने अपने आसपास अनुयायियों का जमघट नहीं लगाया किंतु फिर भी वह शताब्दियों से प्रेरणा की स्रोत रही है। उनके रचित पद आज भी स्त्रियों और पुरुषों द्वारा गाए जाते हैं।

Scanned with CamScanner

**प्रश्न 9. उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकार क्या अर्थ निकालते हैं ?**

**(NCERT)**

उत्तर—आठवीं से अठारहवीं शताब्दी के मध्य विभिन्न धार्मिक संप्रदायों, उनके धार्मिक विश्वासों एवं आचरणों के मध्य समन्वय देखने को मिलता था, जो इस काल की सबसे प्रमुख विशेषता थी। संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकारों का तात्पर्य पूजा प्रणालियों के समन्वय से है। इस काल के साहित्य और मूर्तिकला दोनों में ही विभिन्न प्रकार के देवी-देवता दृष्टिगत होते हैं। यह इस बात का भी द्योतक है कि इस काल में पूजित विष्णु, शिव और देवी, जिन्हें अनेक रूपों में व्यक्त किया गया, उनकी आराधना की परिपाटी में लगातार विस्तार होता रहा।

इतिहासकारों ने इस समन्वय को समझाने के लिए यह सुझाव देते हैं कि इस काल में पूजा प्रणालियों से दो प्रक्रियाएँ कार्यरत थीं। एक प्रक्रिया ब्राह्मणीय विचारधारा के प्रचार से संबंधित थी। इसका प्रसार पौराणिक ग्रंथों की रचना, संकलन और परिरक्षण द्वारा हुआ। ये ग्रंथ सरल संस्कृत छंदों के थे, जो वैदिक विद्या से विहीन स्त्रियों और शूद्रों द्वारा भी ग्राह्य थे। इस काल की दूसरी प्रक्रिया थी स्त्री,शूद्रों तथा अन्य सामाजिक वर्गों की आस्थाओं और आचरणों को ब्राह्मणों द्वारा स्वीकृत कर उसे एक नया स्वरूप प्रदान करना। इस प्रकार समूचे उपमहाद्वीप में प्रचलित इस "महान" संस्कृत-पौराणिक परिपाटी तथा "लघु" परम्पराओं के बीच समन्वय से ही अनेक धार्मिक विचारधाराओं और पद्धतियों का आरंभ हुआ।

इस समन्वय का सबसे विशिष्ट उदाहरण पुरी और उड़ीसा में मिलता है, जहाँ के मुख्य देवता जगन्नाथ (शाब्दिक अर्थ में संपूर्ण विश्व का स्वामी) को बारहवीं शताब्दी के आते-आते भगवान विष्णु का एक स्वरूप मान लिया गया। यद्यपि उड़ीसा में प्रचलित भगवान विष्णु के स्वरूप तथा अन्य भागों में मिलने वाले स्वरूपों में काफी भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार समन्वय के ऐसे उदाहरण देवी संप्रदाय में भी मिलते हैं। सामान्यत: इन देवियों की उपासना सिंदूर से पोते गए पत्थर के रूप में ही की जाती थी। किंतु पौराणिक परंपरा के भीतर स्थानीय देवियों को मुख्य देवता की पत्नी के रूप में मान्यता दी गई, कभी वह लक्ष्मी के रूप में भगवान विष्णु की पत्नी बनी और कभी शिव की पत्नी पार्वती के रूप में दर्शायी गई।

**प्रश्न 10. किस हद तक उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों का स्थापत्य स्थानीय परिपाटी और सार्वभौमिक आदर्शों का मिश्रण है?**

**(NCERT)**

उत्तर—भारत में इस्लाम के आगमन के पश्चात् कई परिवर्तन हुए, जो शासक वर्ग तक सीमित नहीं थे, अपितु पूरे उपमहाद्वीप में दूरदराज तक और विभिन्न समुदायों, जैसे—किसान, शिल्पी,योद्धा, व्यापारी आदि के बीच फैल गए। एक ही समाज में रहने वाले हिंदू मुसलमानों ने एक-दूसरे के खान-पान, रीति-रिवाजों, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परंपराओं को प्रभावित किया। और इन्हीं स्थानीय परंपराओं से एक सार्वभौमिक धर्म भी प्रभावित होने लगा। एक सार्वभौमिक धर्म के स्थानीय परंपराओं के साथ जटिल मिश्रण के सर्वोत्तम उदाहरण संभवत: मस्जिदों की स्थापत्य कला में देखने को मिलते हैं। मस्जिदों के स्थापत्य संबंधी कुछ तत्व सार्वभौमिक थे, जैसे इमारत का मक्का की तरफ अनुस्थापन जो मेहराब (प्रार्थना का आला)और मिनबार (व्यासपीठ)की स्थापना से लक्षित होता था। जबकि स्थापत्य कला के बहुत से तत्वों में स्थानीय परंपराओं की झलक के कारण अंतर देखने को मिलते हैं, जैसे छत और निर्माण का सामान। उदाहरण के लिए, तेरहवीं शताब्दी में केरल में बने एक मस्जिद की छत का आकार मंदिरों से मिलता है जबकि बांग्लादेश में अतिया मस्जिद का निर्माण ईंटों से हुआ है। इसी प्रकार श्रीनगर में झेलम नदी के किनारे बनी शाह हमदान मस्जिद को कश्मीर की सभी मस्जिदों में "मुकुट का नगीना" समझा जाता है। 1395 ई. में बनी यह मस्जिद कश्मीरी लकड़ी की स्थापत्य कला का सर्वोत्तम उदाहरण है।

**प्रश्न 11. बे-शरिया और बा-शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता और अंतर दोनों को स्पष्ट कीजिए।**

**(NCERT)**

उत्तर—मुसलमान समुदाय को निर्देशित करने वाले कानून शरिया कहलाते हैं। सूफीवाद ग्यारहवीं शताब्दी के आते-आते एक पूर्ण विकसित आंदोलन बन चुका था, जिसका सूफी और कुरान से जुड़ा अपना साहित्य था। सूफीवाद कई पन्थों अथवा सिलसिलों में संगठित था।

Scanned with CamScanner

Mo. IMP.



इनमें से अधिकांश सूफी शरिया के नियमों का पालन करते हुए स्वयं को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे, इन्हें बा-शरिया सूफी कहा जाता था। इसके विपरीत कुछ रहस्यवादियों ने सूफी सिद्धांतों के मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी। ये रहस्यवादी खानकाहों का तिरस्कार करके फ़कीर की जिंदगी बिताते थे। ये मुख्य रूप से निर्धनता और ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। इन्हें विभिन्न नामों जैसे, कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी आदि नामों से जाना जाता था। शरिया की अवहेलना करने के कारण इन्हें बे-शरिया कहा जाता था। इन्हें शरिया का पालन करने वाले ( बा-शरिया) सूफ़ियों से अलग नजरिए से देखा जाता था।

दोनों सूफी परंपराओं के बीच एकरूपताएँ—(1) दोनों ही सूफी परंपराओं का दृष्टिकोण रहस्यवादी था। (2) ये एकेश्वर में विश्वास करते थे। इनके अनुसार अल्लाह ही सर्वोच्च, सर्वशक्तिशाली और सर्वव्यापक है। (2) दोनों ही परंपराओं में पीर अर्थात् गुरु को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। (3) दोनों में अल्लाह के समान पूर्ण समर्पण करने पर बल दिया जाता था। (4) दोनों परंपराओं में रूढ़िवादी परिभाषाओं और धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना ( पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। (5) इन परंपराओं में मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।

दोनों परंपराओं में अंतर— (1) दोनों परंपराओं में सबसे मुख्य अंतर था कि बा-शरिया, शरिया का पालन करते थे, जबकि बे-शरिया शरिया की अवहेलना करते थे। (2) बा-शरिया सूफी ख़ानकाहों में रहते थे, जिनका नियंत्रण शेख,पीर अथवा मुर्शीद के हाथों में था, जबकि बे-शरिया ख़ानकाह का तिरस्कार करके स्वच्छंद फ़कीर की जिंदगी बिताते थे। (3) बा-शरिया सूफी सन्त, गरीबी के जीवन में विश्वास नहीं करते थे। इनमें से अनेक सूफी सन्तों ने राजनीति में भी भाग लिया और सुल्तानों एवं अमीरों से मेल-जोल स्थापित किया। जबकि बे-शरिया निर्धनता और ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते थे।

**प्रश्न 12. चर्चा कीजिए कि अलवार, नयनार और वीरशैवों ने किस प्रकार जाति प्रथा की आलोचना प्रस्तुत की ? (NCERT)**

उत्तर—अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा और ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज उठाई। उस काल के संबंध में यह बात सत्य प्रतीत होती है क्योंकि भक्ति संत विविध समुदायों से थे, जैसे—ब्राह्मण, किसान, शिल्पकार और कुछ संत तो "अस्पृश्य" मानी जाने वाली जातियों से भी था। अलवार और नयनार संतों की रचनाओं को वेदों जैसा महत्वपूर्ण बताकर इस परंपरा को सम्मानित किया गया। उदाहरण के लिए, अलवार संत का एक मुख्य काव्य प्रबंधन " नलयिरादिव्यप्रबंधम्" का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इन ग्रंथों को ब्राह्मणों द्वारा रचित चारों वेदों के समान महत्वपूर्ण बताया जाता था।

इसी प्रकार वीरशैव परम्परा में भी जाति की अवधारणा और कुछ समुदायों के दूषित होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया गया। इन्हीं सब कारणों से ब्राह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन्हें गौण स्थान मिला था जिन्हें अस्पृश्य माना गया, वे वीरशैवों के अनुयायी हो गए।

**प्रश्न 13. कबीर अथवा बाबा गुरुनानक के मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिए। इन उपदेशों का संप्रेषण किस प्रकार हुआ? (NCERT)**

उत्तर—कबीर के मुख्य उपदेश—चौदहवीं-पंद्रहवी शताब्दीं मैं उभरने वाले संत कवियों में कबीरदास सबसे प्रमुख थे। कबीर की बानी तीन विशिष्ट किंतु परस्पर व्याप्त परिपाटियों में संकलित हैं—कबीर बीजक, कबीर ग्रन्थावली तथा आदि ग्रंथ साहिब। इन ग्रंथों में संकलित कबीर के प्रमुख उपदेश हैं—

(1) कबीरदास ने हिन्दू धर्म के बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खंडन किया। (2) उन्होंने इस्लामी दर्शन के एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का समर्थन किया। (3) उन्होंने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटियों का सहारा लिया। (4) इस्लामी दर्शन की भाँति कबीर ने सत्य को अल्लाह, खुदा हजरत और पीर संबोधित किया है। (5) कबीरदास वेदांत दर्शन से भी प्रभावित थे, और उन्होंने सत्य को अलख (अदृश्य), निराकार, ब्रह्मन् और आत्मन् कहकर भी संबोधित किया है। (6) कबीरदास के अनुसार, भक्ति के माध्यम से मोक्ष अर्थात् मुक्ति प्राप्त हो सकते है। (7) कबीरदास ने रूढ़िवादी परम्पराओं और जातिगत भेदभावों का विरोध किया। (8) कबीरदास के विचार विविध और विरोधात्मक पदों में व्यंजित होते हैं। उनकी कविताएँ जिक्र और इश्क के सूफी सिद्धांतों

Scanned with CamScanner

Mo. IMP.



इनमें से अधिकांश सूफ़ी शरिया के नियमों का पालन करते हुए स्वयं को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे, इन्हें बा-शरिया सूफ़ी कहा जाता था। इसके विपरीत कुछ रहस्यवादियों ने सूफ़ी सिद्धांतों के मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी। ये रहस्यवादी खानकाहों का तिरस्कार करके फ़कीर की जिंदगी बिताते थे। ये मुख्य रूप से निर्धनता और ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। इन्हें विभिन्न नामों जैसे, कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी आदि नामों से जाना जाता था। शरिया की अवहेलना करने के कारण इन्हें बे-शरिया कहा जाता था। इन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफ़ियों से अलग नजरिए से देखा जाता था।

**दोनों सूफ़ी परंपराओं के बीच एकरूपताएँ**—(1) दोनों ही सूफ़ी परंपराओं का दृष्टिकोण रहस्यवादी था। ये एकेश्वर में विश्वास करते थे। इनके अनुसार अल्लाह ही सर्वोच्च, सर्वशक्तिशाली और सर्वव्यापक है। (2) दोनों ही परंपराओं में पीर अर्थात् गुरु को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। (3) दोनों में अल्लाह के समान पूर्ण समर्पण करने पर बल दिया जाता था। (4) दोनों परंपराओं में रूढ़िवादी परिभाषाओं और धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। (5) इन परंपराओं में मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।

**दोनों परंपराओं में अंतर**— (1) दोनों परंपराओं में सबसे मुख्य अंतर था कि बा-शरिया, शरिया का पालन करते थे, जबकि बे-शरिया शरिया की अवहेलना करते थे। (2) बा-शरिया सूफ़ी ख़ानकाहों में रहते थे, जिसका नियंत्रण शेख,पीर अथवा मुर्शीद के हाथों में था, जबकि बे-शरिया ख़ानकाह का तिरस्कार करके रहस्यवादी फ़कीर की जिंदगी बिताते थे। (3) बा-शरिया सूफ़ी सन्त, गरीबी के जीवन में विश्वास नहीं करते थे। इनमें से अनेक सूफ़ी सन्तों ने राजनीति में भी भाग लिया और सुल्तानों एवं अमीरों से मेल-जोल स्थापित किया। जबकि बे-शरिया निर्धनता और ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते थे।

**प्रश्न 12. चर्चा कीजिए कि अलवार, नयनार और वीरशैवों ने किस प्रकार जाति प्रथा की आलोचना प्रस्तुत की ? (NCERT)**

उत्तर—अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा और ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज उठाई। उस काल के संबंध में यह बात सत्य प्रतीत होती है क्योंकि भक्ति संत विविध समुदायों से थे, जैसे—ब्राह्मण, किसान, शिल्पकार और कुछ संत तो "अस्पृश्य" मानी जाने वाली जातियों से भी था। अलवार और नयनार संतों की रचनाओं को वेदों जैसा महत्वपूर्ण बताकर इस परंपरा को सम्मानित किया गया। उदाहरण के लिए, अलवार संत का एक मुख्य काव्य प्रबंधन " नलयिरादिव्यप्रबंधम्" का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इन ग्रंथों को ब्राह्मणों द्वारा रचित चारों वेदों के समान महत्वपूर्ण बताया जाता था।

इसी प्रकार वीरशैव परम्परा में भी जाति की अवधारणा और कुछ समुदायों के दूषित होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया गया। इन्हीं सब कारणों से ब्राह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन्हें गौण स्थान मिला एवं जिन्हें अस्पृश्य माना गया, वे वीरशैवों के अनुयायी हो गए।

**प्रश्न 13. कबीर अथवा बाबा गुरुनानक के मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिए। इन उपदेशों का संप्रेषण किस प्रकार हुआ? (NCERT)**

उत्तर—**कबीर के मुख्य उपदेश**—चौदहवीं-पंद्रहवी शताब्दी में उभरने वाले संत कवियों में कबीरदास सबसे प्रमुख थे। कबीर की बानी तीन विशिष्ट किंतु परस्पर व्याप्त परिपाटियों में संकलित हैं—कबीर बीजक, कबीर ग्रंथावली तथा आदि ग्रंथ साहिब। इन ग्रंथों में संकलित कबीर के प्रमुख उपदेश हैं—

(1) कबीरदास ने हिन्दू धर्म के बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खंडन किया। (2) उन्होंने इस्लामी दर्शन के एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का समर्थन किया। (3) उन्होंने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटियों का सहारा लिया। (4) इस्लामी दर्शन की भाँति कबीर ने सत्य को अल्लाह, खुदा हजरत और पीर संबोधित किया है। (5) कबीरदास वेदांत दर्शन से भी प्रभावित थे, और उन्होंने सत्य को अलख (अदृश्य), निराकार, ब्रह्मन् और आत्मन् कहकर भी संबोधित किया है। (6) कबीरदास के अनुसार, भक्ति के माध्यम से मोक्ष अर्थात् मुक्ति प्राप्त हो सकती है। (7) कबीरदास ने रूढ़िवादी परम्पराओं और जातिगत भेदभावों का विरोध किया। (8) कबीरदास के विचार विविध और विरोधात्मक पदों में व्यंजित होते हैं। उनकी कविताएँ जिक्र और इश्क के सूफ़ी सिद्धांतों

Scanned with CamScanner

का इस्तेमाल 'नाम सिमरन' की हिंदू परंपरा की अभिव्यक्ति के लिए करती है। (9) कबीर कुछ शब्द-पदों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे शब्द और शून्य, यह अभिव्यंजना योगी परंपरा से ली गई है।

**कबीर के उपदेशों का संप्रेषण**—कबीरदास की रचनाएँ अनेक भाषाओं और बोलियों में मिलती हैं। इनमें से कुछ निर्गुण कवियों की खास बोली संत भाषा में है। कबीरदास ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक परिपाटियों का उपयोग किया है। कभी-कभी उन्होंने बीज लेखन की भाषा का प्रयोग भी किया। उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों द्वारा उनके विचारों को अलग-अलग ग्रंथों में संकलित किया और इनका संरक्षण किया।

**बाबा गुरुनानक के मुख्य उपदेश**—बाबा गुरुनानक (1469 – 1539) का जन्म एक हिंदू व्यापारी परिवार में हुआ था। उनके द्वारा दिए गए उपदेश तथा संदेश उनके भजनों और उपदेशों में निहित है, जो इस प्रकार हैं—

(1) गुरुनानक देव ने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया। धर्म के सभी बाहरी आडंबरों, जैसे—यज्ञ, अनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा व कठोर तप को उन्होंने अस्वीकार किया। (2) हिन्दू और मुसलमानों के धर्मग्रंथों को उन्होंने नकारा। (3) बाबा गुरुनानक के लिए परम पूर्ण रब का कोई आकार या लिंग नहीं था। उन्होंने इस रब की उपासना के लिए सरल उपाय बताया, निरंतर स्मरण व नाम का जाप। (4) विभिन्न रूढ़ियों एवं जातिवादी परंपराओं का विरोध गुरुनानक देव द्वारा किया गया।

**गुरुनानक के विचारों का संप्रेषण**—गुरुनानक ने अपने विचारों को पंजाबी भाषा के शब्द के माध्यम से सामने रखा। बाबा गुरुनानक यह शब्द अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रबाब बजाकर उनका साथ देता था। इसके अतिरिक्त गुरुनानक के विचारों और उपदेशों का संकलन 'गुरुग्रंथ साहिब' में भी किया गया जो सिखों का प्रमुख धर्मग्रंथ है।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. प्रारंभिक भक्ति आंदोलन का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर—प्रारंभिक भक्ति आंदोलन**—भक्ति परंपरा के क्रमिक विकास के दौरान अधिकांशत: संत कवि एक ऐसे नेता के रूप में उभरे जिनके आस-पास भक्तजनों के एक पूरे समुदाय का गठन हो गया, जिनमें स्त्रियों और निम्न वर्णों को भी स्थान दिया गया। इस प्रकार विविधता भी भक्ति आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता थी।

प्रारंभिक भक्ति आंदोलन छठी शताब्दी में अलवारों (विष्णुभक्त) और नयनारों (शिव भक्त) के नेतृत्व में आरंभ हुए। अलवार एवं नयनार संत एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए तमिल में अपने इष्ट की स्तुति करते हुए भजन गाते थे। अपनी यात्रा के दौरान कुछ स्थलों को अलवार और नयनार संतों ने अपने इष्ट का निवास स्थल घोषित किया। इन्हीं स्थानों पर शासकों द्वारा मंदिरों का निर्माण कराया गया और ये तीर्थस्थल माने गए। इन मंदिरों में अनुष्ठानों के दौरान संत कवियों के भजन गाए जाते थे और इन संतों की प्रतिमा की पूजा भी की जाती थी।

**भक्ति आंदोलन की विशेषताएँ**—प्रारंभिक भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

**1. धार्मिक आडंबरों का विरोध**—प्रारंभिक भक्ति आंदोलनों द्वारा मूर्तिपूजा जैसे निरर्थक धार्मिक आडंबरों का विरोध किया गया। भक्ति संतों के अनुसार ईश्वर को केवल सच्ची भक्ति के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

**2. जातिप्रथा का विरोध**—अलवार एवं नयनार संतों ने समाज में व्याप्त जातिप्रथा तथा ब्राम्हणों की प्रभुता का विरोध किया। ये भक्ति संत विविध समुदायों जैसे—ब्राम्हण, शिल्पकार, किसान और कुछ अस्पृश्य जातियों से भी आए थे।

**3. संत कवियों को प्रमुख स्थान**—अलवार एवं नयनार संतों को भक्तिकाल में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। इन संतों द्वारा घोषित तीर्थस्थलों में शासकों द्वारा मंदिर बनवाए गए, जहाँ अनुष्ठानों के दौरान संत कवियों के भजन गाए जाते थे तथा उनकी प्रतिमा की पूजा भी की जाती थी। अलवार व नयनार संतों की रचनाओं को वेदों जितना महत्वपूर्ण माना गया।

**4. भक्ति में एकाग्रता को महत्व**—भक्ति संतों द्वारा एक हजार वर्ष पुरानी भक्तिपूर्ण उपासना पद्धति का प्रचलन प्रारंभ किया गया, जिसके अंतर्गत भक्ति प्रदर्शन में मंदिरों में इष्टदेव की आराधना से लेकर उपासकों का प्रेमभाव में तल्लीन हो जाना दिखाई पड़ता है।

**5. स्त्री भक्तों की उपस्थिति**—प्रारंभिक भक्ति आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता इनमें स्त्री भक्तों की उपस्थिति थी। अंडाल नामक अलवार स्त्री तथा करइक्काल अम्मइयार नामक शिवभक्त स्त्री इस काल के प्रमुख स्त्री भक्त थे। इन स्त्रियों ने अपने सामाजिक कर्तव्यों का परित्याग किया किंतु ये किसी समुदाय का हिस्सा नहीं बनीं।

**प्रश्न 2. भारत में इस्लाम किस प्रकार लोक प्रचलन में आया एवं उनके प्रभावों को लिखिए।**

उत्तर—**इस्लाम का आगमन व प्रसार**—711 ईसवी में मुहम्मद बिन कासिम नाम के एक अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया और खलीफा के क्षेत्र में शामिल कर लिया। बाद में लगभग तेरहवीं शताब्दी में तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी। समय के साथ दक्कन और अन्य भागों में भी सीमा का प्रसार हुआ। बहुत से क्षेत्रों में राज्य का स्वीकृत धर्म इस्लाम ही था। सोलहवीं शताब्दी में मुगल सल्तनत की स्थापना के साथ यही स्थिति बनी रही। अठारहवीं शताब्दी में उभरने वाले कई क्षेत्रीय राज्यों के शासक भी इस्लाम धर्म मानने वाले थे।

**लोक प्रचलन में इस्लाम**—इस्लाम के आगमन के बाद भारतीय उपमहाद्वीप में अनेक परिवर्तन हुए, जो केवल शासक वर्ग तक सीमित नहीं थे, अपितु पूरे उपमहाद्वीप में कई क्षेत्रों और विभिन्न सामाजिक समुदायों-किसान, शिल्पी, योद्धा, व्यापारी आदि के बीच फैल गये।

**इस्लाम में अन्य तत्वों का प्रभाव**—इस्लाम के सार्वभौमिक तत्वों में अकसर सांप्रदायिक (शिया, सुन्नी) कारणों से तथा स्थानीय लोकाचारों के प्रभाव की वजह से भी धर्मान्तरित लोगों के व्यवहारों में भिन्नता दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, खोजा इस्माइली (शिया) समुदाय के लोगों ने कुरान के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए देशी साहित्यक विधा का सहारा लिया। जीनन नामक भक्ति गीत, पंजाबी, मुल्तानी, सिंधी, कच्छी, गुजराती आदि भाषाओं में दैनिक प्रार्थना के दौरान गाए जाते थे। इसके अलावा मुसलमान अरब व्यापारी जो मालाबार तट (केरल) के किनारे बसे, उन्होंने न केवल स्थानीय मलयालम भाषा को अपनाया अपितु स्थानीय आचारों जैसे मातृकुलीयता व मातृगृहता को भी अपनाया।

**प्रश्न 3. सूफी मत के मुख्य धार्मिक विश्वासों और आचारों की व्याख्या कीजिए। (NCERT)**

उत्तर—इस्लाम के आरंभिक शताब्दियों में धार्मिक और राजनीतिक संस्था के रूप में खिलाफत की बढ़ती सत्ता के विरुद्ध में कुछ आध्यात्मिक लोगों का झुकाव रहस्यवाद और वैराग्य की ओर बढ़ने लगा, इन्हें सूफी कहा जाने लगा। ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आंदोलन बन गया था, जिसका सूफी और कुरान से जुड़ा अपना साहित्य था। सूफी मत के प्रमुख धार्मिक विश्वास और आचार इस प्रकार थे—

(1) सूफ़ियों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की। (2) सूफ़ियों ने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया। (3) सूफ़ीमत में पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी गई थी। (4) सूफी संतों द्वारा दिए गए कुछ प्रमुख उपदेश इस प्रकार थे— (i) ईश्वर एक है। (ii) ईश्वर सर्वशक्तिमान है। (iii) हमें सच्चे मन से प्रभु-भक्ति करनी चाहिए। (iv) मनुष्य को अपना सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए। (v) सूफ़ी मत में मुर्शीद(गुरु) को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। (vi) सूफ़ी मत के अनुसार, मनुष्य को सांसारिक पदार्थों का मोह नहीं करना चाहिए। (vii) मानव सेवा तथा जरूरतमंद लोगों की सहायता करना प्रभु भक्ति करने के समान है। (5) सूफ़ी समुदाय संस्थागत दृष्टि से एक संगठित समुदाय (ख़ानकाह) के इर्द-गिर्द स्थापित थे। (6) पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों या अनुयायियों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी। (7) सूफ़ी संतों की दरगाह पर की गई ज़ियारत सारे इस्लामी संसार में प्रचलित है। इस अवसर पर संत के आध्यात्मिक आशीर्वाद यानी बरकत की कामना की जाती है। (8) नाच और संगीत भी ज़ियारत का हिस्सा थे, खासतौर से कव्वालों द्वारा प्रस्तुत रहस्यवादी गुणगान जिससे परमानंद की भावना को उभारा जा सकता था। (9) सूफ़ी संत ज़िक्र (ईश्वर का नाम जप) या फिर समा (श्रवण करना)यानी आध्यात्मिक संगीत की महफिल

Scanned with CamScanner

के द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे। (10) सूफी संत सदाचारिता और मानव के प्रति दयालुता पर बल देते थे।

**प्रश्न 4. क्यों और किस तरह शासकों ने नयनार और सूफी संतों से अपने संबंध बनाने का प्रयास किया ?** **(NCERT)**

**उत्तर—अलवार एवं नयनार संतों के शासकों से संबंध**—नवीं से तेरहवीं शताब्दी में दक्षिण भारत में शक्तिशाली चोल शासकों का शासन था। चोल सम्राटों ने ब्राह्मणीय और भक्ति परंपरा को समर्थन दिया तथा विष्णु और शिव के मंदिरों के निर्माण के लिए भूमि-अनुदान दिए। चिदम्बरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम के विशाल शिव मंदिर चोल सम्राटों की मदद से ही निर्मित हुए। इस काल में कांस्य में ढली शिव प्रतिमाओं का भी निर्माण हुआ, जो कि स्पष्टत: नयनार संतों के दर्शन से प्रभावित था।

नयनार और अलवार संत वेल्लाल कृषकों द्वारा सम्मानित होते थे, इसलिए आश्चर्य नहीं कि शासकों ने भी उनका समर्थन पाने का प्रयास किया। उदाहरणत: चोल सम्राटों ने दैवीय समर्थन पाने का दावा किया और अपनी सत्ता प्रदर्शन के लिए सुंदर मंदिरों का निर्माण कराया जिनमें पत्थर और धातु से बनी मूर्तियाँ सुसज्जित थीं। इन मूर्तियों के माध्यम से संत कवियों की परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देने का प्रयास किया। इन सम्राटों ने तमिल भाषा के शैव भजनों का गायन इन मंदिरों में प्रचलित किया। उन्होंने ऐसे भजनों का संकलन एक ग्रंथ (तवरम) के रूप में करने का जिम्मा उठाया। उदाहरण के लिए, 945 ईसवी के अभिलेखानुसार चोल सम्राट परांतक प्रथम ने संत कवि अप्पार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ शिव मंदिर में स्थापित कराई।

**सूफी संत और शासक**—मध्यकाल में सुल्तान यह जानते थे कि अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म मानने वाली नहीं है। ऐसे समय में सुलतानों ने सूफी संतों का सहयोग लिया जो अपनी आध्यत्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्भूत मानते थे और उल्मा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे। सूफी संतों की धर्मनिष्ठा विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास के कारण ये काफी लोकप्रिय थे। इन कारणों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।

यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यत्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं। इसलिए शासक अपनी कब्र सूफी दरगाहों और ख़ानकाहों के नज़दीक बनाना चाहते थे। सुलतान सूफी संतों के प्रति अपनी आस्था दर्शाने के लिए उनकी दरगाहों की यात्रा भी करते रहते थे। उदाहरण के लिए, ख्वाजा मुइनुद्दीन की दरगाह पर मुहम्मद बिन तुगलक ने सबसे पहले यात्रा की। सोलहवीं शताब्दी के आते-आते अजमेर की यह दरगाह काफी लोकप्रिय हो गई थी। इस दरगाह को जानने वाले तीर्थयात्रियों के भजनों ने ही अकबर को यहाँ आने के लिए प्रेरित किया जिसने चौदह बार इस दरगाह की यात्रा की।

**प्रश्न 5. उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए कि क्यों भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया ?** **(NCERT)**

**उत्तर**—भक्ति संतों और सूफी चिंतकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया। इसका कारण यह है कि ये भक्ति संत और सूफी चिंतक देश के विभिन्न भागों से संबंधित थे। इनके लिए कोई एक भाषा विशेष पवित्र या अपवित्र नहीं थी। उनका मुख्य उद्देश्य जनसामान्य को मानसिक शांति व सांत्वना प्रदान करना था। इसलिए अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने प्राय: स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया जिन्हें समझना साधारण लोगों के लिए आसान था।

उदाहरण के लिए—(1) अलवार तथा नयनार संतों ने अपने विचार जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए स्थानीय भाषा का प्रयोग किया। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए तमिल में अपने इष्टदेव की स्तुति गाते थे। (2) उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के मुख्य प्रचारकों ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति किसी विशिष्ट भाषा में न करके जनसामान्य की भाषा का प्रयोग किया। कबीर के भजन, दोहे अनेक भाषाओं में मिलते हैं। इनमें से कुछ रचनाएँ संत भाषा में हैं, जो निर्गुन कवियों की विशेष बोली थी। (3) सूफी चिंतकों ने न केवल अपनी सभाओं में स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया अपितु दिल्ली में चिश्ती समुदाय के लोग हिंदवी में बातचीत करते थे। बाबा फ़रीद ने भी क्षेत्रीय भाषा में काव्य रचना की जो गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है। (4) गुरुनानक देव ने भी अपने भजन और विचार पंजाबी भाषा में प्रचारित किए।

Scanned with CamScanner

**प्रश्न 6. इस अध्याय में प्रयुक्त किन्हीं पाँच स्रोतों का अध्ययन कीजिए और उसमें निहित सामाजिक व धार्मिक विचारों पर चर्चा कीजिए।** **(NCERT)**

उत्तर—इस अध्याय में प्रयुक्त किन्हीं पाँच स्रोतों में निहित सामाजिक और धार्मिक विचार इस प्रकार हैं—

**1. स्रोत-1 ( चतुर्वेदी और अस्पृश्य )**—इस स्रोत के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन भक्ति संत जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोधी थे। इस स्रोत में तोंदराडिप्पोडि नामक एक ब्राह्मण अलवार ने अपने काव्य में लिखा है कि चतुर्वेदी ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता थे किंतु उनकी निष्ठा भगवान विष्णु की सेवा के प्रति नहीं थी। इसलिए भगवान विष्णु को वे दास अधिक प्रिय थे, जो जाति से उच्च नहीं थे, किन्तु उनकी भगवान के चरणों की सेवा में आस्था थी।

**2. स्रोत-2 ( शास्त्र या भक्ति )**—उक्त स्रोत के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अलवार के समान नयनार संत ने भी ब्राह्मणों के जन्म आधारित श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं किया। उनका विचार था कि बिना शिव की भक्ति के ब्राह्मणों के शास्त्रज्ञान, उच्च कुल, गोत्र का कोई अर्थ नहीं है। क्योंकि ईश्वर की दृष्टि में भी शास्त्रज्ञान, कुल या गोत्र से परे भक्ति और प्रेम का अधिक महत्व होता है।

**3. स्रोत-3 ( एक राक्षसी )**—यह स्रोत एक शिवभक्त करइक्काल अम्मइयार की कविता से लिया गया है। इस स्रोत में वे स्वयं का वर्णन करती हैं कि इस काल के भक्त संत महिलाओं ने स्त्रियों की पारम्परिक जीवन शैली को ग्रहण नहीं किया। वह शिव को अपना आराध्य देव मानती थी। उन्होंने अपने परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या के मार्ग का अनुसरण किया, जिसके कारण उनकी स्थिति एक राक्षसी के समान दिखाई देने लगी।

**4. स्रोत-4 ( अनुष्ठान और यथार्थ संसार )**—यह स्रोत बासवन्ना द्वारा रचित काव्य से लिया गया है, जिन्होंने वीरशैव समुदाय की स्थापना की। इस स्रोत में ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों का विरोध किया गया है। वे कहते हैं कि ब्राह्मण साँप की मूर्ति पर दूध चढ़ाते थे, किंतु वास्तविक साँप देखते ही वे उसे मारने लगते थे। इसी प्रकार वे पत्थर से बनी ईश्वर की मूर्ति, जो खाना नहीं खा सकती उसे भोग लगाते थे। किंतु उसी ईश्वर के भूखे सेवक को भोजन देने से मना कर देते थे, जबकि वह भोजन खा सकता था।

**5. स्रोत-5 ( खम्बात का गिरिजाघर )**—यह स्रोत उस फरमान (आदेश) का अंश है, जिसे मुगल सम्राट अकबर ने 1598 ई. में खम्बात के गिरिजाघर के संबंध में जारी किया था। उक्त स्रोत से यह ज्ञात होता है कि मुगल बादशाह अकबर उदार व धर्मसहिष्णु था। वह सभी धर्मों का आदर करता था तथा उन्हें सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करता था। उसने बलपूर्वक धर्म परिवर्तन पर रोक लगा दी तथा सभी धर्मों व संप्रदायों को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की। स्रोत से यह भी ज्ञात होता है कि कट्टर मुस्लिम सम्राट के उदार धार्मिक विचारों के विरोधी थे।

## तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

**प्रश्न 1. तथ्यों के आधार पर प्रमाणित कीजिए की कबीर अपने समय के परिवर्तनकारी विचारधारा के महान संत थे।**

उत्तर—कबीर मध्यकालीन भारत के महान क्रांतिकारी विचारक थे, इन्होंने तत्कालीन समय में समाज में व्याप्त आडम्बरवाद एवं अज्ञानता के विरुद्ध अपने विचार व्यक्त किये। हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर कबीर को परिवर्तनकारी विचारधारा के संत के रूप में स्थापित कर सकते हैं—

(1) कबीर अपने समय के ज्ञानमार्गी विचारधारा के प्रमुख संत थे, उन्होंने अपने तर्क के द्वारा समाज में व्याप्त बुराइयों का खण्डन किया। (2) उन्होंने समान रूप से हिन्दुओं और मुसलमानों के आडम्बरवादी विचारधाराओं पर प्रहार किया। (3) कबीर ने अपनी रचनाओं ( कबीर की साखियों ) के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर किया। (4) कबीर की कुछ रचनाएँ उलटबाँसी कविताएँ कहलाती हैं, जिसमें रोजमर्रा की बातों को उल्टे अर्थ में प्रस्तुत किया गया, जो आडम्बर के ऊपर प्रहार करता है। (5) कबीर की कुछ रचनाएँ हिन्दू धर्म के बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए बताया गया। (6) कबीर अपनी रचनाओं में ऐश्वर्यवाद एवं मूर्तिभंजन का समर्थन करते हैं। (7) एक तरफ कबीर इस्लाम के कट्टरवादी विचारधारा का विरोध करते हैं तो दूसरी तरफ हिन्दू धर्म के "नाम" एवं "सिमरन" की परम्परा का समर्थन करते हैं इन सब बातों के आधार पर देखने के बाद निष्कर्ष निकलता है कि "कबीर अपने समय के महान संत थे।"

••

Scanned with CamScanner

...में सरकारी स्रोतों का उपयोग करते समय लेखक को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है-

(1) सरकारी स्रोत वास्तविक स्थिति का निष्पक्ष वर्णन नहीं करते। अत: उनके द्वारा प्रस्तुत विवरणों को ...सत्य नहीं माना जा सकता। (2) सरकारी स्रोत विभिन्न घटनाओं के संबंध में किसी-न-किसी रूप में ...दृष्टिकोण एवं अभिप्रयोग के पक्षधर होते हैं। वे विभिन्न घटनाओं का विवरण सरकारी दृष्टिकोण से ही ...करते हैं। (3) सरकारी स्रोतों की सहानुभूति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के प्रति ही होती है। ...किसी-न-किसी रूप में पीड़ितों के साथ व स्थान पर सरकार के ही हितों के समर्थक होते हैं। उदाहरण— ...दंगा आयोग की नियुक्ति विशेष रूप से यह पता लगाने के लिए की गई थी कि सरकारी राजस्व की माँग ...विद्रोह के प्रारंभ में क्या योगदान था अथवा क्या किसान राजस्व की ऊँची दर के कारण विद्रोह के लिए उतारू ...थे। आयोग ने संपूर्ण जाँच-पड़ताल करने के बाद जो रिपोर्ट प्रस्तुत की उसमें विद्रोह का प्रमुख कारण ...अथवा साहूकारों को बताया गया। रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से यह कहा गया कि सरकारी माँग किसानों ...उत्तेजना अथवा क्रोध का कारण बिल्कुल नहीं थी। (4) आयोग इस प्रकार की टिप्पणी करते हुए यह भूल ...कि आखिर किसान साहूकारों की शरण में जाते क्यों थे। वास्तव में, सरकार द्वारा निर्धारित भू-राजस्व की ...अधिक थी और वसूली के तरीके इतने कठोर थे कि किसान को विवशतापूर्वक साहूकार की शरण में ...ही पड़ता था। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह था कि औपनिवेशिक सरकार जनता में व्याप्त असंतोष अथवा ...के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानने के लिए तैयार नहीं थी।

अत: किसान इतिहास लेखन में सरकारी स्रोतों का उपयोग करते हुए कुछ बातों का विशेष रूप से ध्यान ...जाना चाहिए। उदाहरण—

(1) सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन अत्यधिक सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। (2) सरकारी रिपोर्टों के ...साक्ष्य का मिलान समाचार-पत्रों, गैर-सरकारी विवरणों, वैधिक अभिलेखों आदि में उपलब्ध साक्ष्यों से ...के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

## अध्याय 7

# औपनिवेशिक शहर—नगरीकरण, नगर-योजना, स्थापत्य

...प्रश्न

1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. मद्रास में ब्रिटिश आबादी के रूप में जाना जाता था—
(a) फोर्ट (b) फोर्ट विलियम (c) फोर्ट सेंट जॉर्ज (d) इनमें से कोई नहीं।

2. मद्रास, कलकत्ता तथा बम्बई मूलत: गाँव थे—
(a) बुनाई के (b) मत्स्य ग्रहण के (c) (a) एवं (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं।

3. अखिल भारतीय जनगणना का पहला प्रयास किया गया था—
(a) सन् 1872 में (b) सन् 1882 में (c) सन् 1892 में (d) सन् 1852 में ।

4. बम्बई का टॉउन हाल बनाया गया—
(a) सन् 1865 में (b) सन् 1866 में (c) सन् 1844 में (d) सन् 1833 में।

5. इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट मद्रास में आकर बसे—
(a) सन् 1650 में (b) सन् 1639 में (c) सन् 1661 में (d) सन् 1670 में।

6. वायसराय जॉन लॉरेंस ने अधिकृत रूप से अपनी काउंसिल शिमला स्थानांतरित की—
(a) सन् 1840 को (b) सन् 1850 को (c) सन् 1864 को (d) सन् 1870 को।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. लाल, बाल, पाल अंग्रेजों के विरोध में उदारवादी विचारधारा के समर्थक थे।
2. सन् 1914-18 में प्रथम विश्वयुद्ध के समय अंग्रेजों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था।
3. महात्मा गाँधी को सन् 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।
4. गाँधीजी ने तृतीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
5. ब्रिटेन की लेबर पार्टी भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में थी।
6. भारत छोड़ो आंदोलन अगस्त, 1942 में प्रारंभ हुआ।

उत्तर—1. असत्य, 2. सत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. सत्य, 6. सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. जलियाँवाला बाग हत्याकांड कब हुआ ?
2. गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन कब वापस लिया ?
3. कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (सन् 1929) के अध्यक्ष कौन थे ?
4. गाँधी-इरविन समझौता कब हुआ ?
5. 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान कब किया गया ?
6. लॉर्ड माउंटबेटन को भारत का वायसराय नियुक्त कब किया गया ?
7. रजवाड़ों में राष्ट्रवादी सिद्धान्त को बढ़ावा देने के लिए क्या स्थापना की गई ?
8. किस स्थान में पहला गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया ?
9. असहयोग आन्दोलन किस सन् में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाया गया ?
10. किस सन् के अंत में दूसरा गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ ?
11. पहला गोलमेज सम्मेलन किस सन् में आयोजित किया गया ?
12. किस सन् में इंग्लैण्ड की सरकार ने एक कमीशन नियुक्त किया ?
13. फरवरी 1947 ई. में किसको वायसराय नियुक्त किया गया ?
14. एक व्यापक जन-आन्दोलन क्या था ?
15. हिन्द स्वराज पुस्तक किसने लिखी थी ?
16. सीमांत गाँधी किसे कहा जाता है ?
17. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का जिम्मेदार कौन था ?
18. पश्चिमी सीमान्त प्रांत में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का प्रसार किसने किया ?
19. भारत छोड़ो आन्दोलन कब प्रारंभ हुआ ?
20. पूना समझौता कब हुआ था ?
21. किस दिन भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय असेंबली में बम फेंका ?
22. कांग्रेस के किस अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा की गई ?
23. गाँधी जी ने भारत में सत्याग्रह का सबसे पहला प्रयोग कब और कहाँ किया ?
24. खिलाफत आंदोलन की शुरुआत कब हुई ?
25. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड कब हुआ था ?

उत्तर—1. अप्रैल 1919, 2. फरवरी 1922, 3. जवाहरलाल नेहरू, 4. सन् 1931, 5. मुस्लिम लीग ने, 6. सन् 1947, 7. प्रजामंडलों की, 8. लंदन, 9. सन् 1920, 10. सन् 1931, 11. नवम्बर, 1930, 12. 1927 ई., 13. लॉर्ड माउंटबेटन, 14. भारत छोड़ो आन्दोलन, 15. गाँधी जी ने, 16. खान अब्दुल गफ्फार खाँ, 17. जनरल डायर, 18. खान अब्दुल गफ्फार खाँ, 19. सन् 1942 में, 20. 25 सितम्बर, 1932 को, 21. 8 अप्रैल, 1929 को, 22. कलकत्ता अधिवेशन, 23. 1917 ई. में चम्पारण (बिहार) में, 24. 1 अगस्त, 1920 को, 25. 13 अप्रैल, 1919 को।

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. महात्मा गाँधी की तुलना अब्राहम लिंकन से क्यों की जाती है ?**

उत्तर—महात्मा गाँधी की तुलना अब्राहम लिंकन से निम्न कारणों से की जाती है—

(1) अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने गाँधी के बलिदान की तुलना अब्राहम लिंकन के बलिदान से की है।

Scanned with CamScanner

(2) पत्रिका में कहा गया कि एक धर्मांध अमेरिकी ने लिंकन को मार दिया था क्योंकि उन्हें रंग या नस्ल से हटकर मानव मात्र की समानता में विश्वास था और दूसरी ओर एक धर्मांध हिन्दू ने गाँधी जी की लीला समाप्त कर दी, क्योंकि वे भाई-चारे का प्रचार कर रहे थे।

**प्रश्न 2. 'प्रत्यक्ष कार्यवाही' दिवस क्या था ?**

उत्तर—प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस का आह्वान जिन्ना ने पाकिस्तान की स्थापना के लिए लीग की माँग के समर्थन में किया। इसके लिए 16 अगस्त, 1946 का दिन निश्चित किया गया था। उस दिन कलकत्ता में खूनी संघर्ष शुरू हो गया। यह हिंसा कलकत्ता से प्रारंभ होकर ग्रामीण बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रांत व पंजाब तक फैल गई। कुछ स्थानों पर मुसलमानों को तो कुछ अन्य स्थानों पर हिन्दुओं को निशाना बनाया गया।

**प्रश्न 3. उदारवादियों तथा गर्म-दलीय नेताओं की नीति में कोई एक अंतर लिखिए।**

उत्तर—उदारवादी सुधारों के लिए क्रमिक तथा लगातार प्रयास करते रहने के पक्ष में थे। इसके विपरीत गर्म-दलीय नेता औपनिवेशिक शासन के प्रति लड़ाकू नीति के समर्थक थे।

**प्रश्न 4. दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के पश्चात् गाँधी जी ने किन-किन स्थानों पर सत्याग्रह आन्दोलन चलाया और कब-कब चलाया ?**

उत्तर—(1) सन् 1916 में बिहार के चंपारण जिले में। (2) सन् 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में। (3) सन् 1918 में अहमदाबाद (गुजरात) में।

**प्रश्न 5. महात्मा गाँधी भारत में ब्रिटिश सरकार के प्रति असहयोग की नीति क्यों अपनाना चाहते थे ?**

उत्तर—महात्मा गाँधी का मानना था कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ और इसी सहयोग के कारण टिका हुआ था। इसलिए वह असहयोग की नीति अपनाकर ब्रिटिश शासन को समाप्त करना चाहते थे जिससे स्वराज की स्थापना हो सके।

**प्रश्न 6. सन् 1924 में जेल से रिहा होकर गाँधी जी ने क्या किया ?**

उत्तर—महात्मा गाँधी को सन् 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था। फरवरी, 1924 में वे जेल से रिहा हो गए। अब उन्होंने अपना ध्यान घर में बुने खादी के कपड़ों को बढ़ावा देने तथा छूआछूत को समाप्त करने में लगाया। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों के मध्य सौहार्द उत्पन्न करने का प्रयास भी किया।

**प्रश्न 7. सन् 1917 में चम्पारण के काश्तकारों को सुरक्षा दिलाने हेतु गाँधी जी ने क्या किया ? उल्लेख कीजिए।**

उत्तर—सन् 1917 में चम्पारण के किसानों व काश्तकारों को सुरक्षा दिलाने के लिए गाँधी जी ने अनशन किया। उन्होंने उन्हें अपनी पसंद की फसल उगाने की स्वतंत्रता दिलाई।

**प्रश्न 8. 'पूर्ण स्वराज' को औपचारिक रूप से कब और कहाँ स्वीकार किया गया ?**

उत्तर—'पूर्ण स्वराज' की माँग को दिसम्बर, 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में स्वीकार किया गया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पं. जवाहर लाल नेहरू ने की।

**प्रश्न 9. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड क्या था ?**

उत्तर—रौलेट सत्याग्रह के दौरान एक अंग्रेज ब्रिगेडियर ने अमृतसर के जलियाँवाला बाग में हो रही एक सभा पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इस हत्याकाण्ड में 400 से भी अधिक लोग मारे गए।

**प्रश्न 10. गाँधी जी ने साबरमती आश्रम किस उद्देश्य से प्रारंभ किया ?**

उत्तर—गाँधी जी द्वारा इस आश्रम को स्थापित करने (1916 ई.) का उद्देश्य अपने अनुयायियों को सत्य-अहिंसा का मार्ग दर्शाना तथा सत्य अहिंसा के अनुसार व्यवहार करना सिखाना था। उन्होंने यहाँ संघर्ष की अपनी नयी विधि का प्रयोग करना भी प्रारंभ कर दिया।

**प्रश्न 11. खिलाफत आन्दोलन क्या था ?**

उत्तर—खिलाफत आन्दोलन मुसलमानों द्वारा चलाया जा रहा था जो यह माँग कर रहे थे कि पहले के ऑटोमन साम्राज्य के सभी इस्लामी पवित्र स्थानों पर तुर्की के सुल्तान अथवा खलीफा का नियंत्रण बना रहे।

**प्रश्न 12. खिलाफत आन्दोलन को गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन का अंग क्यों बनाया ?**

उत्तर—गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन के विस्तार और मजबूती के लिए इसे असहयोग आन्दोलन का अंग बनाया। उन्हें यह आशा थी कि असहयोग को खिलाफत के साथ मिलाने से भारत के प्रमुख दो धार्मिक समुदाय-हिन्दू और मुसलमान आपस में मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।

Scanned with CamScanner

**प्रश्न 13. गाँधी जी ने सन् 1922 को असहयोग आन्दोलन वापस क्यों लिया ?**

उत्तर—सन् 1922 में चौरी-चौरा नामक स्थान पर कुछ आन्दोलनकारियों ने एक पुलिस चौकी को आग लगा दिया। इस हिंसक घटना में थानेदार के साथ कुछ सिपाही जिंदा जल गए। इस घटना से दुःखी होकर गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया।

**प्रश्न 14. सविनय अवज्ञा आन्दोलन को विफल करने सरकार ने क्या कदम उठाए ?**

उत्तर—सविनय अवज्ञा आन्दोलन को विफल करने सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए—

(1) सरकार ने कांग्रेस के सभी बड़े-बड़े नेताओं (सरदार पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सुभाष चंद्र बोस आदि) को जेल में डाल दिया। (2) कांग्रेस को गैर-कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया।

**प्रश्न 15. सन् 1939 में प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों ने त्यागपत्र क्यों दे दिया ?**

उत्तर—1939 ई. में द्वितीय महायुद्ध आरंभ हो गया। इंग्लैण्ड इसमें शामिल था। भारत के वायसराय लिनलिथगो ने भारतवासियों से पूछे बिना भारत को इस युद्ध में शामिल कर दिया। इस बात से नाराज होकर कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने त्याग-पत्र दे दिया।

**प्रश्न 16. क्रिप्स मिशन भारत क्यों आया ?**

उत्तर—द्वितीय विश्व युद्ध में जापान निरंतर भारत की ओर बढ़ रहा था। भारत में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन चल रहा था। इसलिए स्थिति को अपने पक्ष में करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने सर स्टेफर्ड क्रिप्स को भारत (मार्च 1942 में) भेजा।

**प्रश्न 17. प्रजामंडल आन्दोलन से क्या अभिप्राय है ?**

उत्तर—भारतीय रियासतों (565) में जनता ने आजादी व अन्य सुविधाओं के प्रश्न (भूमि कर की कमी, उचित मजदूरी) को लेकर आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन को प्रजामंडल आन्दोलन का नाम दिया गया है।

**प्रश्न 18. भारत छोड़ो आन्दोलन के महत्व पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

उत्तर—ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्रता देने से इंकार कर दिया था। अतः 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस ने मुंबई में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास कर दिया।

**प्रश्न 19. सन् 1929 में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन किन दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था ?**

उत्तर—सन् 1929 में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन निम्न दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था—

(1) जवाहरलाल नेहरू का अध्यक्ष के रूप में चुनाव जो युवा पीढ़ी के नेतृत्व का प्रतीक था।

(2) 'पूर्ण स्वराज' अथवा पूर्ण स्वतंत्रता की उद्घोषणा।

**प्रश्न 20. दक्षिण अफ्रीका ने गाँधी जी को 'महात्मा' बनाया। इसके पक्ष में दो तर्क दीजिए।**

उत्तर—दक्षिण अफ्रीका ने गाँधी जी को महात्मा बनाया इसके पक्ष में दो तर्क निम्न हैं—

(1) गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में ही पहली बार अहिंसात्मक विरोध के अपने विशेष तरीके का प्रयोग किया। इसे 'सत्याग्रह' का नाम दिया जाता है। (2) यहीं पर उन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच सद्भावना बढ़ाने का प्रयास किया तथा उच्चजातीय भारतीयों को निम्न जातियों और महिलाओं के प्रति भेद-भाव के व्यवहार के लिए चेतावनी दी।

**प्रश्न 21. नमक यात्रा के दौरान गाँधी जी ने एक गाँव के ऊँची जाति के लोगों से स्वराज पाने के संदर्भ में क्या कहा ?**

उत्तर—गाँधी जी ने कहा था कि स्वराज पाने के लिए ऊँची जाति के लोगों को अछूतों की सेवा करनी होगी। केवल नमक कर व अन्य कर समाप्त होने पर स्वराज नहीं आएगा उन्हें उन गलतियों के लिए प्रायश्चित करना होगा जो उन्होंने अछूतों के साथ किए हैं।

**प्रश्न 22. सत्याग्रह सभा की स्थापना क्यों की गई थी ?**

उत्तर—रॉलेट एक्ट के विरुद्ध गाँधी जी ने सत्याग्रह अभियान संगठित किया और रॉलेट एक्ट की यह कहकर आलोचना की कि यह अनुचित, स्वतंत्रता के सिद्धान्तों का विरोधी व व्यक्ति के मूल अधिकारों की हत्या करने वाला है। अभियान को संगठित करने के लिए एक सत्याग्रह सभा स्थापित की गई जिसके अध्यक्ष स्वयं गाँधी जी थे।

**प्रश्न 23. महात्मा गाँधी ने आत्म-शुद्धि अनशन की घोषणा क्यों की ?**

उत्तर—8 मई, 1933 को महात्मा गाँधी ने हरिजन कल्याण कार्यक्रमों के संबंध में अत्यधिक सतर्कता और जागरूकता हेतु अपनी तथा अपने सहयोगियों की शुद्धि हेतु 21 दिनों तक आत्म-शुद्धि अनशन की घोषणा की।

**प्रश्न 24. 'वेवेल योजना' क्या थी ?**

उत्तर—'वेवेल योजना' की मुख्य बात यह थी कि केन्द्र में एक नयी कार्यकारी परिषद् का गठन किया जाएगा, जिसमें वायसराय तथा कमांडर-इन-चीफ को छोड़कर शेष सभी सदस्य भारतीय होंगे।

Scanned with CamScanner

**प्रश्न 25. स्वराज दल का गठन कब और क्यों हुआ ?**

उत्तर—सी. आर. दास और मोतीलाल नेहरू ने दिसम्बर, 1922 ई. में स्वराज दल की स्थापना की। गाँधी जी ने जब चौरी-चौरा कांड के बाद असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया, तो इससे नाराज होकर चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने ऐसा किया।

**प्रश्न 26. इंडियन नेशनल कांग्रेस ने प्रथम राष्ट्रीय योजना समिति कब और क्यों बनाई ?**

उत्तर—1938 ई. में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने प्रथम राष्ट्रीय योजना समिति बनाई। इसका उद्देश्य देश में आर्थिक योजना को लागू करना था जिससे धन का विकेन्द्रीकरण किया जा सके तथा बड़े उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में लाया जा सके।

**प्रश्न 27. बारदोली में हुई कांग्रेस की कार्यसमिति में पारित प्रस्ताव का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर—बारदोली में हुई कांग्रेस की कार्यसमिति में पारित प्रस्ताव में मजदूरों और किसानों के आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन का अंग माना गया तथा उनके आर्थिक व सामाजिक उत्थान के उद्देश्य को समझा गया।

**प्रश्न 28. भारतीय राजनीति पर जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड का क्या प्रभाव पड़ा ?**

उत्तर—इस हत्याकांड में जो अनेक निहत्थे भारतीय मारे गए उससे भारतीयों को अंग्रेजी शासन पर एकदम विश्वास न रहा। 1919 ई. के पश्चात् भारतीय राजनीति ने और उग्र रूप धारण कर लिया और क्रांतिकारी युद्ध का आरंभ हुआ। लोगों के मन में प्रतिशोध की भावना जाग उठी।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. चम्पारण, अहमदाबाद तथा खेड़ा में गाँधी जी के अभियानों का क्या महत्व था ?**

उत्तर—वर्ष 1917 का अधिकांश समय महात्मा गाँधी को बिहार के चंपारण जिले में किसानों हेतु काश्तकारी की सुरक्षा के साथ-साथ अपनी पसंद की फसल उपजाने की स्वतंत्रता दिलाने में बीत गया। अगले वर्ष गाँधी जी गुजरात के अपने गृह राज्य में दो अभियानों में संलग्न रहे। सबसे पहले उन्होंने अहमदाबाद के एक श्रम विवाद में हस्तक्षेप कर कपड़े की मिलों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए काम करने की बेहतर स्थितियों की माँग की। इसके बाद उन्होंने खेड़ा में फसल चौपट होने पर राज्य से किसानों का लगान माफ करने की माँग की। चम्पारण, अहमदाबाद तथा खेड़ा के अभियानों ने गाँधी जी को एक ऐसे राष्ट्रवादी नेता की छवि प्रदान की जिसके मन में गरीबों के प्रति गहरी सहानुभूति थी।

**प्रश्न 2. नमक सत्याग्रह ( सविनय अवज्ञा आन्दोलन ) तथा असहयोग आन्दोलन में क्या समानताएँ थीं ? कोई पाँच समानताएँ लिखिए।**

उत्तर—नमक सत्याग्रह तथा असहयोग आन्दोलन में पाँच समानताएँ इस प्रकार हैं—

(1) देश के विशाल भाग में किसानों ने दमनकारी औपनिवेशिक वन कानूनों का उल्लंघन किया जिसके कारण वे और उनके मवेशी उन जंगलों में नहीं जा सकते थे जहाँ किसी समय वे बिना रोक-टोक घूमते थे। (2) वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार किया। (3) कुछ कस्बों में फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गए। (4) विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षा संस्थानों में पढ़ने से इंकार कर दिया। सन् 1920-22 की तरह इस बार भी गाँधी जी के आह्वान ने सभी भारतीय वर्गों को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपना असंतोष व्यक्त करने हेतु प्रेरित किया। (5) इसके जवाब में सरकार असंतुष्टों को गिरफ्तार करने लगी। नमक सत्याग्रह के दौरान लगभग 60,000 लोगों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार होने वालों में गाँधी जी भी थे।

**प्रश्न 3. साइमन कमीशन भारत में क्यों आया ? भारत में इसका विरोध क्यों हुआ ?**

उत्तर— 1927 ई. में इंग्लैण्ड की सरकार ने एक कमीशन नियुक्त किया। इसके अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे। इसलिए इस कमीशन को साइमन कमीशन कहा जाता है। यह कमीशन 1928 ई. में भारत पहुँचा। इस कमीशन का उद्देश्य 1919 ई. के सुधारों के परिणामों की जाँच करना था। इस कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था। अत: भारत में इसका जगह-जगह पर विरोध किया गया। यह कमीशन जहाँ भी गया वहाँ इसका स्वागत काले झंडे दिखा कर किया गया। अनेक स्थानों पर 'साइमन कमीशन वापस जाओ' के नारे लगाए गए। जनता के इस शांत प्रदर्शन करने को सरकार ने बहुत ही कठोरतापूर्वक दबा दिया। लाहौर में इस कमीशन का विरोध करने के कारण लाला लाजपत राय पर लाठियों से वार किया गया जिससे वे शहीद हो गए। देश के सभी राजनैतिक दलों ने सरकार की इस नीति की बहुत कड़ी निंदा की।

Scanned with CamScanner

**प्रश्न 4. असहयोग आन्दोलन की ओर ले जाने वाली घटनाओं का वर्णन कीजिए।**

उत्तर—असहयोग आन्दोलन (सन् 1920-22) निम्नलिखित कारणों व घटनाओं से चलाया गया—

(1) भारतीयों ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों को पूरा सहयोग दिया था। परंतु महायुद्ध की समाप्ति पर अंग्रेजों ने भारतीय जनता का बहुत शोषण किया। (2) प्रथम महायुद्ध के दौरान भारत में प्लेग आदि महामारियाँ फूट पड़ी। परंतु अंग्रेजी सरकार ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। (3) गांधी जी ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने का प्रचार इस आशा से किया था कि वे भारत को स्वराज प्रदान करेंगे। परंतु युद्ध की समाप्ति पर ब्रिटिश सरकार ने गांधी जी की आशाओं पर पानी फेर दिया। (4) 1919 ई. में ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट एक्ट पास कर दिया। जिसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए बंदी बनाया जा सकता था। इस काले कानून के कारण जनता में नाराजगी फैल गयी। (5) इसी बीच गाँधी जी को पंजाब में जाने से रोक दिया गया। इसके अतिरिक्त कांग्रेस के अनेक बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। (6) रॉलेट एक्ट के विरुद्ध प्रदर्शन के लिए अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल जनसभा हुई। अंग्रेजों ने अचानक एकत्रित भीड़ पर गोलियाँ चलायीं जिससे सैकड़ों लोग मारे गए। (7) सितंबर 1920 ई. में कांग्रेस ने अपना अधिवेशन कलकत्ता में बुलाया। इस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा गया जिसे बहुमत से पास कर दिया गया।

**प्रश्न 5. गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**

उत्तर—महात्मा गाँधी सिर्फ राजनीतिक स्वंतत्रता के ही पक्षधर नहीं थे बल्कि वे आर्थिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति के भी पक्षधर थे। इस भावना को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ग्राम उद्योग संघ, तालीमी संघ और गौ-रक्षा संघ बनाए। उन्होंने समाज में शोषण को समाप्त करने तथा सामाजिक समानता स्थापित करने हेतु आर्थिक क्षेत्र के विकेन्द्रीकरण की वकालत की। खादी उनके आर्थिक कार्यक्रम का प्रतीक थी। उन्होंने सभी प्रकार के सामाजिक असमानताओं, जैसे-धर्म-समुदाय व जाति के भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। अस्पृश्यता को वे भारतीय समाज की सबसे घृणित बुराई मानते थे। गाँधी जी ने 'अछूतों' को 'हरिजन' की संज्ञा दी। गाँधी जी ने महिलाओं के सुधार हेतु भी अथक प्रयास किए।

**प्रश्न 6. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रमुख कार्यक्रमों की विवेचना कीजिए।**

उत्तर—सविनय अवज्ञा आन्दोलन के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम निर्धारित किए गए थे—

(1) विदेशी कपड़ों की होली जलाना। (2) सेना तथा पुलिस में भर्ती न होना। (3) नमक कानून तथा अन्य कानूनों का उल्लंघन करना। (4) शराब की दुकानों पर महिलाओं द्वारा धरना देना। (5) भू-राजस्व व लगान जैसे करों का भुगतान नहीं करना। (6) अदालतों, विधानमंडलों, सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का बहिष्कार करना।

**प्रश्न 7. असहयोग आन्दोलन क्या था ? विभिन्न सामाजिक वर्गों ने आन्दोलन में किन विभिन्न तरीकों से भाग लिया ?**

उत्तर—भारतीयों द्वारा अंग्रेजी सरकार का सहयोग बंद कर देना असहयोग था। लोगों ने सरकारी शिक्षा संस्थाओं, अदालतों और विधानमण्डलों का बहिष्कार किया, विदेशी वस्त्रों का भी त्याग किया, सरकार से प्राप्त उपाधियाँ और सम्मान वापस कर दिए। स्त्रियों ने भी असहयोग आन्दोलन में बढ़कर भाग लिया और अपने जेवरों का खुलकर दान किया। असहयोग आन्दोलन एक जन आन्दोलन था तथा इसमें भारत की जनता ने बढ़-चढ़कर तथा अपने-अपने तरीकों से भाग लिया।

**प्रश्न 8. गाँधी-इरविन समझौते की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर—मार्च, 1931 को सम्पन्न हुए गाँधी-इरविन समझौते की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) कांग्रेस की ओर से गाँधी जी सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित करने हेतु सहमत हो गए। (2) वायसराय सविनय अवज्ञा आन्दोलन के संबंध में लागू किए गए अध्यादेशों के वापस लेने के लिए सहमत हो गए। (3) सरकार शराब एवं अफीम की दुकानों पर शांतिपूर्ण धरने की अनुमति देने के लिए राजी हो गई। (4) सरकार आन्दोलन के संबंध में गिरफ्तार किए गए आन्दोलनकारियों को छोड़ने तथा आन्दोलन के कारण जब्त की गई सम्पत्तियाँ वापस करने के लिए सहमत हो गई। (5) सरकार समुद्र तट की कुछ दूरी के अंदर रहने वाले लोगों को निःशुल्क समुद्री नमक लेने या बनाने की अनुमति देने हेतु भी सहमत हो गई।

**प्रश्न 9. सविनय अवज्ञा आन्दोलन क्यों प्रारंभ किया गया था ?**

उत्तर—सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आरंभ अथवा सिविल नाफरमानी 1930 ई. में गाँधी जी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। यह आन्दोलन दो चरणों में चला और 1933 ई. के अंत तक चलता रहा। इसके कारणों का वर्णन

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित है—(1) 1928 ई. में 'साइमन कमीशन' भारत आया। इस कमीशन ने भारतीयों के विरोध के बावजूद भी अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी। इससे भारतीयों में असंतोष फैल गया। (2) सरकार ने नेहरू रिपोर्ट की शर्तों को स्वीकार नहीं किया। (3) बारदोली के किसान आन्दोलन की सफलता ने गाँधी जी को सरकार के विरुद्ध आंदोलन चलाये जाने के लिए प्रेरित किया। (4) गाँधी जी ने सरकार के समक्ष कुछ शर्तें रखी, परंतु वायसराय ने इन शर्तों को स्वीकार न किया। इन परिस्थितियों में गाँधी जी ने सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ कर दिया।

**प्रश्न 10. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के महत्व को संक्षेप में लिखिए।**

**उत्तर—महत्व—**सविनय अवज्ञा आन्दोलन अथवा सिविल नाफरमानी वास्तव में ही उस समय तक का सबसे बड़ा जन-संघर्ष था। इस आन्दोलन में देश के सभी भागों तथा सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। लोगों ने बड़ी संख्या में जेल-यात्रा की परंतु सरकार के आगे घुटने टेकने से इंकार कर दिया। यद्यपि 1934 ई. में यह आन्दोलन समाप्त हो गया तो भी यह स्वतंत्रता सेनानियों का तब तक मार्गदर्शन करता रहा जब तक कि देश स्वतंत्र नहीं हो गया।

**प्रश्न 11. साइमन कमीशन के क्या परिणाम निकले ? संक्षेप में लिखिए।**

**उत्तर—**साइमन कमीशन के परिणाम निम्नलिखित हैं—(1) भारतीय यह समझ गए थे कि अंग्रेज उनके हितों के साथ खेल रहे थे। उनके मन में चोर है, तभी तो उन्होंने किसी भारतीय सदस्य को आयोग में स्थान नहीं दिया था। (2) इससे अंग्रेजों की कुटिल प्रवृत्तियाँ उभर कर सामने आ रही थीं। (3) हिन्दू और मुसलमान एकत्रित होकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े। (4) स्त्रियों ने भी पहली बार इस आन्दोलन में भाग लिया, जिससे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में एक नया मोड़ आया। (5) शिक्षा के प्रसार के लिए अधिक-से-अधिक राष्ट्रीय विद्यालय खोलने का प्रयास किया गया। (6) इससे लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार शीघ्रता से होने लगा। (7) विदेशी माल के बहिष्कार के फलस्वरूप भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिला।

**प्रश्न 12. असहयोग आन्दोलन में अंग्रेजी सरकार का प्रतिरोध करने के लिए क्या-क्या तरीके अपनाए ?**

**उत्तर—**असहयोग आन्दोलन का एक निश्चित कार्यक्रम था। इसके अनुसार अंग्रेजी सरकार का प्रतिरोध करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए गए—

(1) वकीलों ने अदालतों में जाने से इंकार कर दिया। (2) विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों व कॉलेजों में जाना बंद कर दिया। (3) किसानों, श्रमिकों तथा अन्य वर्गों ने इसकी अपने तरीके से व्याख्या की और औपनिवेशिक शासन के प्रति 'असहयोग' के लिए उन्होंने प्राप्त निर्देशों का पालन करने की अपेक्षा अपने हितों से मेल खाते तरीकों का प्रयोग करते हुए कार्रवाई की। (4) अनेक नगरों व कस्बों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चले गये। सरकारी आँकड़ों के अनुसार 1921 ई. में 396 हड़तालें हुई जिसमें 6 लाख श्रमिक शामिल हुए और इससे 70 लाख कार्यदिवसों की क्षति हुई। (5) गाँवों में भी आंदोलन के प्रति लोगों में जोश था, उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जन-जातियों ने वन्य-कानूनों की अवहेलना प्रारंभ कर दी। (6) अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए। कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अफसरों का सामान ढोने (उठाने) से मना कर दिया।

**प्रश्न 13. प्रथम विश्व युद्ध के दौरान क्रांतिकारी आन्दोलन का स्वरूप क्या रहा ?**

**उत्तर—**तत्काल और पूर्ण स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत क्रांतिकारियों के लिए प्रथम विश्व युद्ध का होना स्वर्णिम अवसर प्रतीत हुआ। सन् 1915-19 में बंगाल में राजनीतिक डकैतियाँ व हत्याएँ चरम सीमा पर पहुँच गई। अधिकांश क्रांतिकारी गुट, बाघा जतिन के नाम से प्रसिद्ध जतीन्द्र नाथ मुखर्जी के नेतृत्व में एकजुट हो गए। 9 सितम्बर, 1915 को बालासोर (उड़ीसा) में पुलिस द्वारा घेर लिए जाने पर भी जतिन ने अंत समय तक वीरतापूर्वक मुकाबला किया।

इस काल के दूसरे महान क्रांतिकारी रास बिहारी बोस थे जो बंगाल व पंजाब के क्रांतिकारियों के बीच की एक कड़ी थे। कलकत्ता से दिल्ली राजधानी परिवर्तन के अवसर पर जब वायसराय लॉड हार्डिंग दिल्ली में प्रवेश कर रहे थे तब उनके जुलूस पर बम फेंका गया। ब्रिटिश सेना में भारतीय सैनिकों के सशस्त्र विद्रोह की योजना भी इन्हीं की थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने 'भारतीय स्वतंत्रता लीग' और 'आजाद हिन्द फौज' (आई. एन. ए.) का गठन हुआ।

**प्रश्न 14. महात्मा गाँधी ने खुद को आम लोगों जैसा दिखाने के लिए क्या किया ?** **(NCERT)**

**उत्तर—**महात्मा गाँधी सादा जीवन और उच्च आदर्शों के स्वामी थे। उन्होंने खुद को आम जनता जैसा दिखाने के लिए अग्रलिखित कार्य किए—

Scanned with CamScanner

(1) वह आम लोगों के बीच घुल-मिलकर रहते थे। उनके मन में उनके कष्टों के प्रति हमदर्दी थी। इसलिए वे उनके प्रति सहानुभूति जताते थे। (2) वे साधारण लोगों जैसे वस्त्र पहनते थे। धोती उनकी विशेष पहचान थी। इसके विपरीत अन्य राष्ट्रवादी नेता प्राय: पश्चिमी शैली के वस्त्र पहनते थे। (3) वे प्रतिदिन कुछ समय के लिए चरखा चलाते थे। इस प्रकार उसने आम जनता के श्रम को गौरव प्रदान किया। (4) वे आम लोगों की ही भाषा बोलते थे।

**प्रश्न 15. किसान महात्मा गाँधी को किस तरह देखते थे ? (NCERT)**

उत्तर—किसान महात्मा गाँधी को अपना हितैषी समझते थे, उनका बहुत सम्मान करते थे व उन्हें चमत्कारिक व्यक्तित्व का स्वामी मानते थे। वे गाँधी जी को 'गाँधी बाबा', 'गाँधी महाराज' या 'महात्मा' आदि नामों से पुकारते थे। गाँधी जी वास्तव में भारतीय किसान के उद्धारक के समान थे जो उनकी ऊँचे करों व अधिकारियों के दमन से रक्षा कर सकते थे। उनका मानना था कि गाँधीजी उनके जीवन में सम्मान और स्वायत्तता वापस लेने वाले व्यक्ति हैं। गरीब किसानों के बीच गाँधी जी की अपील को उनकी साधारण जीवन-शैली तथा उनके द्वारा धोती तथा चरखे के प्रयोग से बहुत बल मिला। जाति से महात्मा गाँधी एक व्यापारी थे जबकि पेशे से वे एक वकील थे। परंतु अपनी सरल जीवन-शैली और अपने हाथों से काम करने के प्रति लगन के कारण वे गरीब किसानों से बहुत अधिक सहानुभूति रखते थे। दूसरी ओर गरीब किसान उनकी 'महात्मा' के समान पूजा करते थे।

**प्रश्न 16. नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का महत्वपूर्ण मुद्दा क्यों बन गया था ? (NCERT)**

उत्तर—नमक एक बहुमूल्य राष्ट्रीय संपदा थी जिस पर औपनिवेशिक सरकार ने अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया था। गाँधी जी के अनुसार यह एकाधिकार चौतरफा अभिशाप था। प्रत्येक भारतीय अपने घर में नमक का प्रयोग करते थे, परन्तु उन्हें घरेलू उपयोग के लिए नमक बनाने से रोका गया और उन्हें दुकानों से ऊँचे दाम पर नमक खरीदने हेतु बाध्य किया गया। अत: नमक कानून के खिलाफ जनता में बहुत असंतोष था। गाँधी जी भी नमक कानून को घृणित कानून मानते थे। इस प्रकार नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(1) नमक कानून ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक था। इसके अनुसार नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य का एकाधिकार स्थापित था। (2) नमक पर राज्य का एकाधिकार अत्यधिक अलोकप्रिय तथा असंतोषपूर्ण था। जनसामान्य में इस कानून के प्रति असंतोष व्याप्त था। (3) नमक उत्पादन पर सरकार के एकाधिकार ने लोगों को एक महत्वपूर्ण किन्तु सरलतापूर्वक उपलब्ध ग्रामीण-उद्योग से वंचित कर दिया था।

**प्रश्न 17. राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन के लिए अखबार महत्वपूर्ण स्रोत क्यों हैं ? (NCERT)**

उत्तर—राष्ट्रीय आन्दोलन के अध्ययन के स्रोतों में अखबार का महत्वपूर्ण स्थान है। इनसे हमें राष्ट्रीय आन्दोलन के अध्ययन में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। राष्ट्रीय आन्दोलन के अध्ययन हेतु अखबार सबसे महत्वपूर्ण स्रोत निम्न कारणों से हैं—

(1) समाचार पत्रों अथवा अखबारों से राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति ब्रिटिश सरकार के दृष्टिकोण का पता चलता है। (2) अंग्रेजी एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में छपने वाले समकालीन समाचार-पत्रों में राष्ट्रीय आन्दोलन से संबंधित सभी घटनाओं का विवरण मिलता है। (3) समाचार पत्रों से राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। (4) अखबारों से यह ज्ञात होता है कि जनसामान्य की राष्ट्रीय आन्दोलन तथा गाँधी जी के विषय में क्या धारणा थी। (5) अखबारों द्वारा महात्मा गाँधी की गतिविधियों पर नजर रखा जाता था क्योंकि गाँधी जी से संबंधित समाचारों को विस्तृत रूप से प्रकाशित किया जाता था। अत: समाचार पत्रों से विशेष रूप से महात्मा गाँधी तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं।

**प्रश्न 18. चरखे को राष्ट्रवाद का प्रतीक क्यों चुना गया ? (NCERT)**

उत्तर—चरखे को राष्ट्रवाद का प्रतीक इसलिए चुना गया क्योंकि यह मानव श्रम व उसके महत्व का प्रतीक था। गाँधी जी का मानना था कि आधुनिक युग में मशीनों ने व्यक्तियों को गुलाम बनाकर श्रमिकों के हाथों से काम और रोजगार छीन लिया। इससे आम व्यक्ति निष्क्रिय बनते जा रहे हैं। उन्होंने मशीनों की आलोचना की एवं चरखे को ऐसे मानव समाज के प्रतीक के रूप में देखा जिसमें मशीनों और प्रौद्योगिकी को बहुत महत्व नहीं दिया। गाँधी जी के अनुसार भारत एक गरीब देश है। यह चरखा गरीबों को पूरक आय प्रदान करेगा जिससे वे स्वावलंबी बनेंगे, उन्हें बेरोजगारी एवं गरीबी से मुक्ति दिलाने में चरखा उन्हें स्वावलंबी बनाकर सहायता करेगा। गाँधी जी यह भी मानते थे कि मशीनों से श्रम बचाकर लोगों को मौत के मुँह में धकेलने या उन्हें बेरोजगार करके सड़क पर फेंकने के समान है। चरखा धन के केन्द्रीयकरण को रोकने में भी मददगार है।

Scanned with CamScanner

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. भारत छोड़ो आन्दोलन क्यों शुरू किया गया था ? आप यह कैसे सोचते हैं कि भारत छोड़ो आन्दोलन सही मायने में एक जन आन्दोलन था ?**

**उत्तर**—क्रिप्स मिशन की विफलता के पश्चात् महात्मा गाँधी ने ब्रिटिशों के विरुद्ध अपना तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया। यह आन्दोलन अगस्त 1942 में प्रारंभ हुआ जिसे 'अंग्रेजों भारत छोड़ों' का नाम दिया गया।

**कारण**—भारत छोड़ो आन्दोलन निम्नलिखित परिस्थितियों में निम्न कारणों से प्रारंभ किया गया—

(1) 1939 ई. में द्वितीय महायुद्ध प्रारंभ हो गया। इंग्लैण्ड इसमें शामिल था। भारत के वायसराय लिनलिथगो ने भारतवासियों से पूछे बिना भारत को इस युद्ध में शामिल कर दिया। इससे नाराज होकर कांग्रेसी मंत्रिमण्डल ने त्याग-पत्र दे दिया। (2) द्वितीय विश्व-युद्ध में जापान निरंतर भारत की ओर बढ़ रहा था। भारत में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन चल रहा था। अत: इस स्थिति को अपने पक्ष में करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने सर स्टेफर्ड क्रिप्स को भारत भेजा। (3) क्रिप्स मिशन मार्च, 1942 में भारत आया—(i) यह वार्ता इसलिए भंग हो गई क्योंकि अंग्रेज सरकार युद्ध के बाद भी भारत को स्वाधीनता का वचन देने तैयार नहीं थी। (ii) क्रिप्स ने कांग्रेस का यह प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। कि युद्ध के पश्चात् एक राष्ट्रीय सरकार बनायी जाए। (4) ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्रता देने से मना कर दिया था। अत: 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस ने मुम्बई में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास कर दिया।

**भारत छोड़ो आन्दोलन एक जन आन्दोलन**—इस आंदोलन की शुरुआत में गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद भी देश के युवा कार्यकर्ता हड़तालों और प्रदर्शनों द्वारा आंदोलन चलाते रहे। कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी सदस्य भूमिगत प्रतिरोध में सबसे अधिक सक्रिय थे। पश्चिम में सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर जैसे कई जिलों में 'स्वतंत्र' सरकार की स्थापना कर दी गई थी। अंग्रेजों ने इस आन्दोलन के प्रति बड़ा ही कड़क रूख अपनाया फिर भी इस विद्रोह को दबाने में सरकार को एक वर्ष से भी अधिक समय लग गया।

भारत छोड़ो आन्दोलन एक व्यापक जन-आंदोलन था जिसमें लाखों भारतीय शामिल थे। इस आंदोलन ने युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया। कांग्रेस के नेता जेल में थे, उस समय जिन्ना और मुस्लिम लीग के सदस्य अपना प्रभाव क्षेत्र फैलाने में लगे थे। इन्हीं वर्षों में लीग को पंजाब और सिंध में अपनी पहचान बनाने का अवसर मिला जहाँ अभी तक उसका कोई विशेष आधार नहीं था। जून, 1944 में जब विश्व-युद्ध समाप्ति की ओर था, गाँधी जी को रिहा कर दिया गया।

**महत्व**—भारत छोड़ो आंदोलन ने यह देखा था कि देश में राष्ट्रवादी भावनाएँ बहुत गहराई तक अपनी जड़ें जमा चुकी थी। जनता संघर्ष व बलिदान के लिए तैयार थी। यह स्पष्ट हो गया था कि जनता की इच्छा के विरुद्ध भारत पर शासन करना अब अंग्रेजों के लिए संभव नहीं था।

**प्रश्न 2. रॉलेट एक्ट क्या था ? अंग्रेजों ने भारत में रॉलेट एक्ट के विरोध में सत्याग्रह (सन् 1919) को दबाने के लिए क्या कदम उठाए ?**

**उत्तर—रॉलेट एक्ट**—रॉलेट एक्ट से तात्पर्य उस कानून से था जो ब्रिटिश सरकार ने मार्च, 1919 में केंद्रीय विधान परिषद् में पास किया। इस कानून को राष्ट्रवादियों का दमन करने के लिए पास किया गया था।

इस कानून के कुछ ऐसे प्रावधान थे जिसने राष्ट्रवादियों में व्यापक आक्रोश उत्पन्न किया। इस कानून के द्वारा सरकार को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वह किसी भी भारतीय को बिना मुकदमा चलाए तथा बिना दंड दिए जेल भेज सकती थी। संबंधित व्यक्ति को न्यायालय में पेश करने की भी आवश्यकता नहीं थी। संक्षेप में, यह एक ऐसा कानून था जिसमें 'कोई दलील, वकील या अपील' नहीं था। राष्ट्रवादी नेताओं ने इसे काला कानून कहकर पुकारा था जिसने नागरिकों की स्वाधीनता पर प्रहार किया था।

**रॉलेट कानून के विरुद्ध सत्याग्रह**—दूसरे राष्ट्रवादियों की तरह गाँधीजी को भी रॉलेट कानून से आघात पहुँचा। फरवरी, 1919 में उन्होंने सत्याग्रह सभा की नींव रखी जिसके सदस्यों ने शपथ ली कि वे इस कानून का पालन नहीं करेंगे तथा गिरफ्तारी देंगे और जेल जाएँगे। संघर्ष का यह एक नया रूप था। अभी तक राष्ट्रवादी आंदोलन, आंदोलनों तक ही सीमित था। बड़ी सभाएँ होती थीं और प्रदर्शन होते थे। सरकार से सहयोग करने से इंकार किया जाता था। विदेशी वस्त्रों तथा स्कूलों का बहिष्कार होता था। परंतु सत्याग्रह ने तुरंत ही आंदोलन को एक नवीन परंतु उच्च स्तर प्रदान किया। अब राष्ट्रवादी कुछ करके दिखा सकते थे।

Scanned with CamScanner

सन् 1919 में मार्च और अप्रैल में भारत में अभूतपूर्व राजनीतिक जागरण आया। लगभग पूरा देश ही एक नई शक्ति से ओत-प्रोत हो गया। हड़तालें, काम रोको अभियान, जुलूस और प्रदर्शन होने लगे। हिन्दू-मुसलमान एकता के नारे हवा में गूँजने लगे। पूरे देश में बिजली-सी दौड़ गई। भारतीय जनता अब विदेशी शासन के अपमान को और सहन करने के लिए तैयार नहीं थी।

**सत्याग्रह के दमन के लिए उठाए गए कदम**—(1) सरकार इस जन-आन्दोलन को कुचलना चाहती थी। बंबई (मुंबई), अहमदाबाद, कोलकाता, दिल्ली तथा कुछ अन्य नगरों में निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर बार-बार लाठियों और गोलियों का प्रहार हुआ। (2) गाँधी जी ने 6 अप्रैल, 1919 को एक शक्तिशाली हड़ताल का आह्वान किया। जनता ने अभूतपूर्व उत्साह से इसका अनुसरण किया। सरकार ने इस जन-प्रतिरोध का सामना विशेषकर पंजाब में दमन से करने का निश्चय किया। (3) पंजाब में अमृतसर में 13 अप्रैल, 1919 को लोग सरकार की दमनकारी नीति का शांतिपूर्ण ढंग से विरोध करने के लिए जलियाँवाला बाग में इकट्ठे हुए। इसी बीच सरकार ने अमृतसर नगर में सैनिक शासन लागू कर दिया। (4) जनरल डायर अपने सैनिकों सहित जलियाँवाला बाग में आ पहुँचा। उन्होंने वहाँ एकत्रित निहत्थे लोगों पर मशीनगन से गोलियाँ चलानी आरंभ कर दीं। इस हत्याकांड में सैकड़ों स्त्री-पुरुष और बच्चे मारे गए। लोगों को कई अन्य यातनाएँ सहनी पड़ीं।

**प्रश्न 3. असहयोग आन्दोलन ने गाँधी जी को एक राष्ट्रीय नेता किस प्रकार बनाया ? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर—असहयोग आंदोलन (1920-22 ई.) महात्मा गाँधी द्वारा चलाया गया पहला राष्ट्रीय आंदोलन था जो एक लोकप्रिय आन्दोलन बना क्योंकि इसमें देश के लगभग सभी वर्गों, धर्मों तथा समुदायों के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। भले ही सन् 1922 में गाँधी को यह आंदोलन वापस लेना पड़ा, तो भी इसने गाँधी जी को एक लोकप्रिय राष्ट्रीय नेता बना दिया। नीचे दिया गया घटनाक्रम तथा तथ्य इस बात का प्रमाण जुटाते हैं—

(1) रॉलेट सत्याग्रह की सफलता से उत्साहित होकर गाँधी जी ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध 'असहयोग' आंदोलन आरंभ कर दिया। लोगों ने अपने संघर्ष का विस्तार करते हुए खिलाफत आंदोलन को असहयोग आंदोलन का अंग बना लिया। यह आंदोलन तुर्की के शासक कमाल अतातुर्क द्वारा समाप्त किया गया जिसमें इस्लाम के सबसे बड़े नेता खलीफा की पुनर्स्थापना की माँग कर रहे थे। (2) गाँधी जी को आशा थी कि असहयोग को खिलाफत के साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय-हिन्दू और मुसलमान आपस में मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे। इन आंदोलनों ने निश्चय ही राष्ट्रीय आंदोलन को एक व्यापक जन आंदोलन का रूप दे दिया। (3) विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में जाना छोड़ दिया। वकीलों ने अदालतों में जाने से इनकार कर दिया। कई कस्बों और नगरों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चला गया। (4) सन् 1857 के विद्रोह के बाद असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप पहली बार अंग्रेजी सत्ता लड़खड़ाती दिखाई दी। (5) फरवरी, 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण करके उसमें आग लगा दी। इस अग्निकांड में कई पुलिस वाले मारे गए। इस हिंसक घटना के कारण गाँधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा। (6) सन् 1922 तक गाँधी जी ने भारतीय राष्ट्रवाद को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया। अब राष्ट्रीय आंदोलन केवल व्यवसायियों तथा बुद्धिजीवियों का ही आंदोलन नहीं रह गया था। अब इसमें हजारों की संख्या में किसानों, श्रमिकों और कारीगरों ने भी भाग लेना शुरू कर दिया। (7) साधारण लोगों के साथ गांधी जी की पहचान उनके वस्त्रों में विशेष रूप से दिखाई देती थी। जहाँ अन्य राष्ट्रवादी नेता पश्चिमी शैली के सूट अथवा भारतीय बंद गला जैसे औपचारिक वस्त्र पहनते थे, वहाँ गाँधी जी लोगों के बीच एक साधारण धोती में जाते थे।

**प्रश्न 4. असहयोग आन्दोलन एक तरह का प्रतिरोध कैसे था ?** **(NCERT)**

उत्तर—असहयोग आन्दोलन सन् 1920 में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाया गया। यह अंग्रेजी शासन तथा सरकार की गलत नीतियों के विरुद्ध एक व्यापक जन-प्रतिरोध था। इस आन्दोलन के कारण एवं परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं—

**कारण एवं परिस्थितियाँ**—(1) भारतीयों ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों को पूर्ण सहयोग दिया था। परंतु महायुद्ध की समाप्ति पर अंग्रेजों ने भारतीय जनता का बहुत शोषण किया। (2) प्रथम महायुद्ध के दौरान भारत में रोग, प्लेग आदि महामारियाँ फैली। परंतु अंग्रेजी सरकार ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। (3) गाँधी जी ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने का प्रचार इस आशा से किया था कि वे भारत को स्वराज प्रदान करेंगे। परंतु युद्ध की समाप्ति पर ब्रिटिश सरकार ने गाँधी जी की आशाओं पर पानी फेर दिया। (4) 1919 ई. में

Scanned with CamScanner

ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट एक्ट पास किया। इस काले कानून के कारण जनता में रोष फैल गया। (5) रॉलेट एक्ट के विरुद्ध प्रदर्शन के लिए अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल जनसभा हुई। अंग्रेजों ने एकत्रित भीड़ पर गोलियाँ चलाईं जिससे हजारों लोग मारे गए। (6) सितम्बर, 1920 ई. में कांग्रेस ने अपना अधिवेशन कोलकाता में बुलाया। इस अधिवेशन में 'असहयोग आन्दोलन' का प्रस्ताव रखा गया जिसे बहुमत से पास कर दिया गया।

**असहयोग आन्दोलन का उद्देश्य**—असहयोग आन्दोलन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे—

(1) ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गयी उपाधियाँ तथा अवैतनिक पद छोड़ दिए जाएँ। (2) विदेशी माल का बहिष्कार करके स्वदेशी माल का प्रयोग किया जाए। (3) स्थानीय संस्थाओं में मनोनीत भारतीय सदस्यों द्वारा त्याग-पत्र दे दिए जाएँ। (4) सरकारी स्कूलों तथा सरकार से अनुदान प्राप्त स्कूलों में बच्चों को पढ़ने के लिए न भेजा जाए। (5) सैनिक, क्लर्क व श्रमिक विदेशों में अपनी सेवाएँ देने से इंकार कर दें। (6) ब्रिटिश अदालतों व वकीलों का धीरे-धीरे बहिष्कार किया जाए।

**असहयोग आन्दोलन की प्रगति तथा अंत**—असहयोग आन्दोलन के उद्देश्यों तथा कार्यक्रमों को जनता तक पहुँचाने के लिए महात्मा गाँधी व मुस्लिम नेता डॉ. अंसारी मौलाना अबुल कलाम आजाद व अली बंधुओं ने पूरे देश का भ्रमण किया। फलस्वरूप शीघ्र ही यह आन्दोलन फैलने लगा। जनता ने सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार कर दिया। बीच चौराहों पर विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'सर' की उपाधि तथा गाँधी जी ने 'केसरे हिन्द' की उपाधि का त्याग कर दिया। इसी बीच उत्तर प्रदेश के चौरी-चौरा नामक स्थान पर उत्तेजित भीड़ ने एक पुलिस चौकी को आग लगा दी। इस हिंसात्मक घटना के कारण गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन की समाप्ति की घोषणा कर दी।

**असहयोग आन्दोलन का महत्व अथवा स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान**—असहयोग आन्दोलन का महत्व व स्वतंत्रता आन्दोलन में इसका योगदान निम्नलिखित हैं—

(1) असहयोग आन्दोलन के कारण कांग्रेस ने सरकार से सीधे टक्कर ली। (2) भारत के इतिहास में पहली बार जनता ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। (3) असहयोग आन्दोलन में 'स्वदेशी' का बहुत प्रचार किया गया। इसके फलस्वरूप देश में उद्योग धंधों का विकास हुआ। (4) सच तो यह है कि गाँधी जी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन ने भारत के स्वाधीनता संग्राम को नयी दिशा प्रदान की। (5) यह आन्दोलन स्वशासन के लिए एक प्रशिक्षण था। (6) इस आन्दोलन से गाँधी जी भारतीय जन-मानस के सबसे बड़े नेता के रूप में उभर कर सामने आए।

**प्रश्न 5. गोलमेज सम्मेलन में हुई वार्ता से कोई नतीजा क्यों नहीं निकल पाया ?** **(NCERT)**

**उत्तर**—गोलमेज सम्मेलनों का आयोजन लंदन में हुआ। इनका उद्देश्य भारतीयों को सत्ता में भागीदारी बनाना था। पहला गोलमेज सम्मेलन नवम्बर, सन् 1930 में आयोजित किया गया। जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इसी कारण यह बैठक असफल रही। जनवरी, सन् 1931 में गाँधी जी को जेल से रिहा कर दिया गया। अगले ही महीने वायसराय के साथ उनकी बहुत-सी लंबी बैठकें हुईं। इन्हीं बैठकों के बाद 'गाँधी इरविन समझौता' हुआ। इस समझौते की शर्तें थी—

(1) सविनय अवज्ञा आन्दोलन को वापस लेना। (2) सभी कैदियों की रिहाई और (3) तटीय प्रदेशों में नमक बनाने की अनुमति देना।

रैडिकल राष्ट्रवादियों ने इस समझौते की आलोचना की क्योंकि गाँधी जी वायसराय से भारतीयों के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता का आश्वासन नहीं ले पाए थे।

सन् 1931 के अंत में दूसरा गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें गाँधीजी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। उनका कहना था कि उनकी पार्टी भारत का प्रतिनिधित्व करती है। परंतु उनके इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि यह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है। रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियंत्रण वाले भू-भाग पर कोई प्रभुत्व नहीं है। तीसरी चुनौती बी. आर. अम्बेडकर की ओर से थी। उनका कहना था कि गाँधी जी तथा कांग्रेस पार्टी निचली जातियों का प्रतिनिधित्व नहीं करती। फलस्वरूप लंदन में हुए इस सम्मेलन का कोई भी परिणाम निकल कर नहीं आया। अत: गाँधी जी को यहाँ से खाली हाथ लौटना पड़ा।

**प्रश्न 6. महात्मा गाँधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन के स्वरूप को किस तरह बदल डाला ?** **(NCERT)**

**उत्तर**—महात्मा गाँधी ने निम्नलिखित तरीकों से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के आधार को व्यापक बनाया और सन् 1922 तक इसके स्वरूप को एकदम परिवर्तित कर दिया था।

Scanned with CamScanner

(1) महात्मा गाँधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन सिर्फ व्यवसायियों व बुद्धिजीवियों का ही आन्दोलन नहीं रह गया था। अब इस आन्दोलन में हजारों की संख्या में किसान, श्रमिक तथा कारीगर भी भाग लेने लगे थे। (2) गाँधी जी ने अपने लिए सामान्य लोगों जैसा जीवन अपनाया। उन्होंने गरीब व मजदूरों व किसानों जैसे वस्त्र पहने। उनका रहन-सहन भी उन्हीं के जैसा था। (3) गाँधी जी ने किसानों व अन्य निर्धनों के कष्टों को दूर करने का प्रयत्न किया। (4) गाँधी जी ने राष्ट्रवादी संदेश का प्रसार अंग्रेजी भाषा के स्थान पर मातृभाषा में करने पर बल दिया। (5) गाँधी जी ने स्वयं चरखा तथा दूसरों को चरखा चलाने हेतु प्रेरित किया। (6) सूत कातने के कार्य ने गाँधीजी को पारंपरिक जाति-व्यवस्था में प्रचलित मानसिक श्रम व शारीरिक श्रम के बीच दीवार को तोड़ने में सहायता की। (7) उनके नेतृत्व में देश के विभिन्न भागों में कांग्रेस की नयी शाखाएँ स्थापित की गई। (8) रजवाड़ों में राष्ट्रवादी सिद्धांत को बढ़ावा देने हेतु प्रजामंडलों की स्थापना की गई। (9) राष्ट्रीय आन्दोलन के आधार को मजबूत बनाने के लिए गाँधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। (10) उनके आकर्षक व्यक्तित्व के कारण देश के अनेक वर्गों व भागों से आए प्रतिभाशाली नेता राष्ट्रीय आन्दोलन का अंग बन गए। (11) उन्होंने इस बात पर बल दिया गया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए त्रुटिरहित समाज का होना अनिवार्य है।

**प्रश्न 7. निजी पत्रों और आत्मकथाओं से किसी व्यक्ति के बारे में क्या पता चलता है ? ये स्रोत सरकारी ब्यौरों से किस तरह भिन्न होते हैं ? (NCERT)**

उत्तर—निजी पत्रों और आत्मकथाओं को निम्न प्रकार से उपयोग सिद्ध किया जा सकता है—

(1) निजी पत्रों में कोई भी व्यक्ति अपनी पीड़ा व प्रसन्नता, असंतोष व बेचैनी, आशाएँ और हताशाएँ व्यक्त करने का प्रयत्न करता है। (2) विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न नेताओं, संगठनों द्वारा लिखे गए पत्रों के माध्यम से निजी जानकारियाँ, सरकार के दृष्टिकोण व्यवहार, राष्ट्रीय नेताओं को जेल में सामना करने वाली परिस्थितियाँ, मानसिक दशाएँ आदि के विषय में जानकारी मिलती है। (3) आत्मकथा में लेखक के सार्वजनिक विचार व्यक्त होते हैं। (4) आत्मकथा को प्राय: स्मृति के आधार पर लिखा जाता है। इससे हमें लिखने वाले को क्या याद रहा होगा, उसे क्या महत्वपूर्ण लगा होगा या वह क्या याद रखना चाहता था या वह दूसरों की दृष्टि में अपनी जिंदगी को किस प्रकार से दिखाना चाहता है, का पता चलता है। (5) आत्मकथा लिखना अपनी तस्वीर गढ़ने का एक तरीका है फलस्वरूप, इस वृतांतों को पढ़ते हुए यह देखने की कोशिश करनी चाहिए जिसे लेखक हमें दिखाना चाहता है। (6) सरकारी ब्यौरों से स्रोतों के रूप में निजी पत्र और आत्मकथाएँ पूरी तरह भिन्न होती हैं। सरकारी ब्यौरे प्राय: गुप्त रूप से लिखे जाते हैं। ये लिखाने वाली सरकार व लिखने वाले विवरणदाता या लेखकों के पूर्वाग्रह, नीतियों, दृष्टिकोण आदि से प्रभावित होते हैं।

## तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

**प्रश्न 1. कल्पना कीजिए कि आप सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने वाली महिला हैं, बताइए कि इस अनुभव का आपके जीवन में क्या अर्थ होता ?**

उत्तर—सविनय अवज्ञा आंदोलन गाँधी जी के द्वारा चलाया गया एक महत्वपूर्ण आंदोलन है, इस आंदोलन में महिलाओं ने बड़े पैमाने में भाग लिया। गाँधी जी की बातों को सुनने के लिए महिलाएँ अपने घरों से बाहर आ जाती थीं।

मैंने भी इस आंदोलन में भाग लिया, साबरमती से दांडी तक गाँधी जी के साथ दांडी यात्रा (मार्च) किया, नमक बनाकर अंग्रेजों के नमक कानून को तोड़ा, विदेशी कपड़ों की होली जलाई व शराब के दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन किया और महिलाओं के साथ जेल गई।

इस आंदोलन के दौरान मैंने यह अनुभव किया कि शहरी क्षेत्रों में सभी वर्गों की महिलाओं ने भाग लिया, किंतु इसमें उच्च जातियों की महिलाओं की अधिक भूमिका थी। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्न किसान परिवार की महिलाओं ने अधिक भाग लिया।

इस दौरान मैंने पाया कि सभी आंदोलनकारी राष्ट्र सेवा को अपना प्रथम कर्तव्य मानते थे। परंतु मैंने अनुभव किया कि कांग्रेस ने लम्बे समय तक महिलाओं को उच्च पद नहीं दिए। उन्हें आंदोलनों में केवल प्रतीकात्मक उपस्थिति तक ही सीमित रखा।

●●

Scanned with CamScanner

अध्याय 8

# महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आन्दोलन—सविनय अवज्ञा और उससे आगे

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—**

1. जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ—
(a) फरवरी, 1919 (b) अप्रैल, 1920 (c) अप्रैल, 1919 (d) मार्च, 1920.
2. गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन वापस लिया—
(a) जनवरी, 1922 (b) जनवरी, 1921 (c) फरवरी, 1921 (d) फरवरी, 1922.
3. कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (सन् 1929) के अध्यक्ष थे—
(a) जवाहरलाल नेहरू (b) सरदार पटेल (c) सुभाषचंद्र बोस (d) महात्मा गाँधी।
4. गाँधी-इरविन समझौता हुआ—
(a) सन् 1930 (b) सन् 1929 (c) सन् 1931 (d) सन् 1928.
5. 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' का आह्वान किया—
(a) कांग्रेस ने (b) मुस्लिम लीग ने (c) हिन्दू महासभा ने (d) अकाली दल ने।
6. लॉर्ड माउंटबेटन को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया—
(a) सन् 1944 (b) सन् 1945 (c) सन् 1947 (d) सन् 1946.
7. रजवाड़ों में राष्ट्रवादी सिद्धान्त को बढ़ावा देने के लिए स्थापना हुई—
(a) मुस्लिम लीग की (b) प्रजामंडलों की (c) होमरूल लीग की (d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—1. (c), 2. (d), 3. (a), 4. (c), 5. (b), 6. (c), 7. (b).

**प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

1. ................ में पहला गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया।
2. असहयोग आन्दोलन ................ में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाया गया।
3. ................ के अंत में दूसरा गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ।
4. पहला गोलमेज सम्मेलन ................ में आयोजित किया गया।
5. ................ ई. में इंग्लैण्ड की सरकार ने एक कमीशन नियुक्त किया।
6. फरवरी ................ में ................ को वायसराय नियुक्त किया गया।
7. ................ एक व्यापक जन-आन्दोलन था।

उत्तर—1. लंदन, 2. सन् 1920, 3. सन् 1931, 4. नवम्बर, 1930, 5. 1927 ई., 6. 1947 ई., लॉर्ड माउंटबेटन, 7. भारत छोड़ो आन्दोलन।

**प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—**

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| 1. चंपारण आंदोलन | (a) 1921 ई. |
| 2. खेड़ा सत्याग्रह | (b) 1919 ई. |
| 3. जलियाँवाला बाग हत्याकांड | (c) 1917 ई. |
| 4. असहयोग आंदोलन | (d) 1928 ई. |
| 5. बारदोली में किसान आंदोलन | (e) 1918 ई. |
| 6. सविनय अवज्ञा आंदोलन | (f) 1942 ई. |
| 7. भारत छोड़ो आंदोलन | (g) 1930 ई.। |

उत्तर—1. (c), 2. (e), 3. (b), 4. (a), 5. (d), 6. (g), 7. (f).

Scanned with CamScanner